सीढ़ी (एडवांस कोर्स)

चित्र का परिचय

जो 4 चित्र तैयार किए गए हैं उनमें यह सीढ़ी का चित्र सबसे बाद का है। यह सीढ़ी का चित्र बाबा के समय पर सन् 1966 में बुद्धियोग से तैयार किया गया है, साक्षात्कार के आधार पर नहीं। बुद्धियोग से माना मनन-चिंतन-मंथन के आधार पर जिसके लिए मु. में कहा है-"बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है।... बच्चे जो विचार-सागर-मंथन कर ऐसे-2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनको शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।"(मु.29.2.76 पृ.2 अंत 3 आदि) बाबा ने मुरली में यह भी कहा है- "सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का, जिन्न की भी कहानी बताते हैं । यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं।"(मु.18.11.70 पृ.2 अंत) फॉरेनर्स इतना सीढ़ी से नहीं समझ सकते हैं। जितना चक्र और झाड़ से। (मु.14.3.68 पृ.1 मध्य) इस चित्र में हेडिंग दी हुई है-'भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की कहानी' भारत शब्द का क्लैरिफिकेशन ल.ना. के चित्र में नीचे दिए गए ईश्वरीय संदेश में मिल चुका है। भारत कहा ही जाता है राम और सीता के लिए, जो भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली आत्माएँ हैं। बेसिक ब्राह्मणों की दुनियाँ में अभी तक जो गलतफ़हमी है कि भारत के उत्थान और पतन की कहानी कोई ब्रह्मा बाबा के लिए सुनाई गई है, ऐसी बात नहीं है; क्योंकि ब्रह्मा कृष्ण की सोल है और कृष्ण की सोल की तुलना बाबा क्राइस्ट से करते हैं। • "क्रिश्चियन और कृष्ण की रास मिलती है।" (मु. 1.5.73 पृ.3 अंत) जैसे- क्रिश्चियन्स न ज्यादा सतोप्रधान बनते, न ज्यादा तमोप्रधान बनते हैं। ठीक इसी तरीके से कृष्ण की सोल भी न ज्यादा सतोप्रधान बनती है और न ज्यादा तमोप्रधान बनती है। इसलिए बाबा ने मु. में कहा है-"क्राइस्ट की कृष्ण के साथ भेंट करते हैं। बुद्ध की नहीं।" (मु.6.8.73 पृ.1 मध्य) राधा कृष्ण वाली आत्माएँ साकार शरीर से ऑल राउण्ड चक्र लगाने वाली नहीं हैं। इसीलिए मु. में बोला है-"84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अंत तक पार्ट है।" (मु.11.3.73 पृ.1 मध्यादि) ये तो अभी वर्तमान में देखा जा सकता है, 1969 में शरीर छोड़ने के बाद कृष्ण की सोल ब्रह्मा ने अपना साकार शरीर धारण नहीं किया है। इससे ये साबित हो रहा है कि ब्रह्मा की सोल साकार शरीर से ऑल राउण्ड चक्र लगाने वाली नहीं है (अर्थात् आदि से अंत तक पार्ट बजाने वाली नहीं है।)

इस सीढ़ी के चित्र में जो दिखाया गया है- भारत का उत्थान, उत्थान के पीरियड में ऊपर श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पुरुषोत्तम संगमयुग दिखाया गया है, 21 वाँ जन्म। 12 जन्म त्रेता के + 8 जन्म सतयुग के = 20 और सीढ़ी में ऊपर वाला 21 वाँ जन्म संगम का।

मु. में कहा है-"हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय संतान हो।" (मु.26.10.72 पृ.1 अंत)

• "आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही।... 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है।"(अ.वा.18.1.08 पृ.2 अंत)

• "मनुष्य 21 जन्म कहते, गायन भी करते। अभी यह ईश्वरीय जन्म एक अलग अकेला है। 8 सतयुग, 12 त्रेता, 21 द्वापर, 42 कलियुग। यह एडॉप्टेड तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सबसे ऊँच मिला है। तुम ब्राह्मणों का ही यह सौभाग्यशाली जन्म है।" (मु.11.12.78 पृ.3 अंत)

तो यह है ऊँच-ते-ऊँच जन्म, जहाँ हम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऊँच-ते-ऊँच प्रारब्ध भोगते हैं। संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधा-कृष्ण वहाँ जो राधा-कृष्ण दिखाए गए हैं वो शरीरधारी कोई सतयुगी राधा-कृष्ण नहीं हैं, सतयुग में बच्चे के रूप में शैशव अवस्था में

राधा-कृष्ण अलग दिखाए गए हैं। सतयुग में जो राधा-कृष्ण दिखाए गए हैं वो कृष्ण और राधा वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा और सरस्वती वाली आत्मा है। उनका पार्ट साकार सृष्टि में वहाँ से शुरू होता है; 21 जन्मों में से पहले जन्म से नहीं; लेकिन दूसरे जन्म से शुरू होता है। इसलिए बाबा ने बोला हुआ है- फुल बेगर टू फुल प्रिन्स तुम बच्चे बनते हो। ब्रह्मा आखिरी जीवन में दादा लेखराज के नाम-रूप से कोई फुल बेगर नहीं बने। उनको फुल बेगर नहीं कहेंगे; क्योंकि फुल बेगर की बाबा ने परिभाषा बताई है। बेगर के पास तो फिर कुछ भी न हो। धन, पद, मान-मर्तबा, संबंधी, कोई भी ताकत न हो उसको कहेंगे फुल बेगर। •“ तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे।... इन पास कुछ भी नहीं है। बेगर अर्थात् जिनके पास कुछ भी न हो। (मु.30.5.68 पृ.1 मध्यांत) तो (फुल) प्रिन्स पहले जन्म में और आख़िरी जन्म में फुल बेगर। सीढ़ी के चित्र में नीचे ब्रह्मा को फिर भी खड़े हुए दिखाया गया है, कृष्ण की सोल तो फिर भी खड़ी हुई है; लेकिन जो बिल्कुल पतित, बेगर अर्थात् भिखमंगे की अवस्था में नीचे दिखाया गया है वो है- ‘भारत’, विदेशी लोग उसको भीख दे रहे हैं। जिनकी भीख पर वो पल रहा है। सीढ़ी में आदि से लेकर अन्त तक 84 जन्मों की जो सीढ़ियाँ हैं उनमें विशेष रूप से भारत की कहानी दिखाई गई है।

संगमयुग के दो भाग

यहाँ सीढ़ी के चित्र में संगमयुग को दो भागों में दिखाया गया है- एक नीचे का भाग दायीं ओर के कॉर्नर में और एक ऊपर का भाग बायीं ओर के कॉर्नर में। पुराने सीढ़ी के चित्र में नीचे का जो भाग कलियुग के अंत में दिखाया गया उसमें यह साफ़ लिखा हुआ है ‘40 वर्ष का संगमयुग।’ जबकि संगमयुग की अधिकतम आयु बाबा ने मुरली में बताई है ‘100 साल’(मु.3.11.76 पृ.3 मध्य)। इससे साबित हो गया कि सन् 1936 से लेकर 1976 तक का समय यहाँ नीचे दिखाया गया है और 1976 के बाद का जितना संगमयुग है वो चित्र में ऊपर दिखाया गया है। सीढ़ी में नीचे 40 वर्ष लिखा हुआ है, तो 1936 से लेकर 1976 तक इन 40 वर्षों के अन्दर ब्रह्मा के द्वारा सतयुगी आत्माओं की शूटिंग का जो स्थापना का कार्य सम्पन्न होना था वो सम्पन्न हो गया और उसकी चार स्टेजेस भी हुईं- सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो। रजोप्रधान और तमोप्रधान की जो शूटिंग सम्पन्न हुई है वो यहाँ सीढ़ी के मध्य से रावण राज्य के रूप में दिखाई गई है, जहाँ 40 वर्ष का सामान्य संगमयुग पूरा हुआ। 60 वर्ष का पुरुषोत्तम संगमयुग सन् 1976 से लेकर सन् 2036 तक सीढ़ी में ऊपर दिखाया गया है। 1976 तक जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी देवता वर्ण की आत्माओं की अन्तिम तमोप्रधान अवस्था की शूटिंग का कार्य सम्पन्न हो जाता है, तो इसके बाद विनाशकाले विपरीत बुद्धि तामसी ब्राह्मण विनश्यन्ति हो जाते हैं और विनाशकाले जो लास्ट सो फास्ट आए हुए प्रीत बुद्धि हैं वो सीढ़ी में ऊपर की ओर विजयन्ति के रूप में दिखाए गये हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति बाबा ने मु. में कहा है-“यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी बननी है। इनमें बड़ा क्लीयर कर लिखना है। ऊपर में लिखना चाहिए- विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति और नीचे जहाँ साधु-समाज आदि-2 हैं वहाँ लिखना चाहिए- विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। यह अक्षर ज़रूर डालना चाहिए।” (मु.6.10.71 पृ.2 अंत) “विनाश काले विपरीत बुद्धि क्यों कहते। क्योंकि प्रीति बिल्कुल नहीं है। और ही बेहद के बाप के दुश्मन बन पडे हैं।” (मु.15.10.78 पृ.1 अंत)

इसीलिए यहाँ नए चित्र में नीचे लिखा गया है- ‘विनाशकाले परमपिता परमात्मा शिव से विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति’ और ऊपर लिखा है- ‘विनाश काले परमपिता शिव से प्रीत बुद्धि विजयते’ किसके साथ विपरीत बुद्धि और किसके साथ प्रीत बुद्धि? प्रीत और विपरीत किसके साथ कहा जाए? सुप्रीम सोल बिंदु बाप के साथ? बिंदु के साथ प्रीति और विपरीत का कोई हिसाब ही नहीं। उसका तो 84 जन्मों का हिसाब-किताब किसी के साथ है ही नहीं। प्रीति और विपरीत का हिसाब-किताब साकार मनुष्य आत्माओं का साकार मनुष्य आत्माओं के साथ होता है। तो ज़रूर वो सुप्रीम सोल किसी साकार मनुष्य तन में मुकर्रर रूप से सन् 76 में प्रवेश करता है, जो इस साकार मनुष्य सृष्टि का बीजरूप राम बाप है उसके प्रति 63 जन्मों में जो प्रीत बुद्धि रहे, उनकी शूटिंग पीरियड में भी प्रीत बुद्धि दिखाई पड़ेगी और 63 जन्मों में जो जहाँ-2 विपरीत बुद्धि हो करके रहे, उनकी यहाँ भी शूटिंग पीरियड में विपरीत बुद्धि दिखाई पड़ेगी। ये रिहर्सल होती रहती है। ये तो नई बात हो गई कि नीचे जो ब्राह्मण बैठे हुए हैं- मम्मा-बाबा जैसी श्रेष्ठ आत्माएँ वे 40 वर्ष का संगमयुग पूरा होने पर विनाशकाले

विपरीत बुद्धि तामसी हो गई! वे विनश्यन्ति के लिस्ट में हुए? ये कैसे हो सकता है ? क्योंकि जिन्होंने देहधारी को याद किया, देहधारी से प्रीत लगाई वे बेसिक से एडवांस में ट्रांसफर नहीं हुए। वे डायरैक्ट बाप से पढ़ाई पढ़ने के निमित्त नहीं बने। उनका शरीर भी विनाश को प्राप्त हो जाता है और पद का भी विनाश हो गया। वास्तव में लक्ष्य तो पाना चाहिए था नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने का; लेकिन पद का विनाश होने के कारण एक सीढ़ी नीचे उतर जाते हैं और नर से प्रिंस, नारी से प्रिंसेज़ बनकर रह जाते हैं। उनकी संगमयुगी पहले जन्म की पदावनति हो जाती है। इन श्रेष्ठ आत्माओं के पदावनति के कारण को जानने के लिए हम यज्ञ के आदि में दृष्टि ले जाएँ तो हमे पता चलेगा । यज्ञ के आदि में, यज्ञ स्थापना के साथ-साथ यज्ञकुंड से विनाशज्वाला भी प्रज्वलित हुई थी। अ.वा. में भी इसका संकेत दिया है- "विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जबसे स्थापना के कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञकुंड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-2 है ना! तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को।" (अ.वा.3.2.74 पृ.13 अंत) विनाशज्वाला प्रज्वलित करने में ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे शरीक हुए थे। विनाशज्वाला प्रज्वलित करने का कोई कारण भी रहा होगा। कोई तो निमित्त बना होगा। प्रजापिता और ब्रह्मा का सम्बन्ध तो बन्ना और बन्नी का हो गया। ब्रह्मा को शिवबाबा ने मुरली में कहा है- बन्नी है। बन्नी साकार में होती है। तो बन्ना भी ज़रूर होगा। प्रजापिता ब्रह्मा ये हो गई जोड़ी। अब उस जोड़ी के बीच में जो फर्स्ट राम और सीता कहे जाते हैं, सीताएँ तो सब हैं; लेकिन फर्स्ट सीता कौन? ब्रह्मा। जो फर्स्ट सीता और राम हैं उनके बीच में रावण बन करके टाँग अड़ाने वाला कौन, जिसने उन दोनों को अलग कर दिया? ज़रूर कोई टाँग अड़ाने वाले भी थे। उनकी तरफ़ भी अव्यक्त वाणी में इशारा कर दिया- विनाशज्वाला प्रज्वलित करने वाले कौन थे? ब्रह्मा और बाप ये तो आपस में लड़े ही; लेकिन बीच में कौन निमित्त बने? बच्चे। जब तक बच्चे नहीं होते तब तक माँ का मोह पति से होता है। जब बच्चों को जन्म दे देती है तो बुद्धि बच्चों में चली जाती है; इसलिए मोस्टली घर-परिवार में जो झगड़े पैदा होते हैं, उनकी मूल जड़ बच्चे ही बनते हैं। माँ अपने कैसे भी, दुष्ट से दुष्ट बच्चे को अपनी गोद से अलग नहीं करना चाहती। माताएँ मोहमयी होती हैं। सबसे बड़ी अम्मा कौन? ब्रह्मा। अव्यक्त वाणी में कहा है- "माताओं का सबसे बड़ा पेपर ही मोह का है। अगर माताएँ नष्टोमोहा हो गईं तो नम्बर आगे हो जाएँगी।"(अ.वा.5.6.77 पृ.216 अंत) लेकिन यह तो ईश्वरीय यज्ञ है। ईश्वरीय यज्ञ और ईश्वर की परम्पराएँ दुनियाँवी परम्पराओं से अलग होती हैं। ईश्वरीय यज्ञ की परम्पराओ में अगर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को अंत तक तरजीह दी गई तो स्वर्ग कभी भी स्थापन नहीं हो सकता। कोई ऐसे आसुरी स्वभाव के बच्चे निमित्त बन गए, जिन्होंने माँ-बाप के बीच में फ्रिक्शन डाल दिया और माँ ने बच्चों के मोह में आ करके बाप के डायरैक्शन पर चलने से इन्कार कर दिया। बच्चा वह जो कंट्रोल में हो और घरवाली वह जो कंट्रोल में हो। घरवाली भी तो रचयिता की रचना है। रचना रचयिता के कंट्रोल में ना हो तो उसके लिए मुरली में बोला है- वह रचना रचना नहीं, जो रचयिता के कंट्रोल में न हो। वहाँ से फ्रिक्शन पड़ गया। ब्रह्मा की सोल परिवार को तो सँभालती रही। ब्रह्मा बाबा के कराची में पहुँचने पर जो भी बच्चे वहाँ पहुँच गए, ब्रह्मा ने उनको सम्भाला। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में माताएँ अपने घर-परिवार को छोड़ती नहीं हैं। उन्होंने सारा परिवार सम्भाला; लेकिन जो बिच्छू, टिण्डन जैसे बच्चे इकट्ठे हो गए उनको कंट्रोल करना कोई माँसी का घर नहीं था। माँ के बस की बात नहीं थी। आखरीन जो अन्जाम होना था वही हुआ। जब तक पवित्रता की शक्ति मम्मा यज्ञ में रही तब तक बाबा आराम से रहे; क्योंकि एक प्रकार से उन्होंने प्रवृत्ति का काम किया। तो यज्ञ चलता रहा और जैसे ही मम्मा रूपी कंट्रोलर ने अपना शरीर छोड़ा, बाबा अच्छी तरह से उन बिच्छू-टिण्डनों की गिरफ्त में आ गए और बाबा को ये एहसास होने लगा कि यज्ञ के आदि में जो बच्चे थे, वो ही श्रेष्ठ बच्चे थे और उनकी यादगार में सोमनाथ मंदिर स्थापन कर दिया; लेकिन 'फिर पछताय होत का जब चिड़िया चुग गई खेत।' अब पछताने से तो कुछ होता नहीं था। उन बच्चों ने ब्रह्मा बाबा के प्राण ले लिए। दिल्ली में स्वर्ग स्थापन होगा, स्वर्गीय संगठन बनेगा, इन सारी आशाओं पर पानी फिर गया और उनका हार्टफेल हो गया। ऐसा क्यों हुआ?

'विनाशकाले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति।' विनाश क्यों हुआ? ज्ञान तो यह नहीं कहता कि मरने के बाद हमें स्वर्ग मिले। ज्ञान तो कहता है तुम बच्चों को जीतेजी मरना है; लेकिन मम्मा-बाबा जैसी श्रेष्ठ आत्माएँ जीतेजी न मर करके शरीर से क्यों चली गईं? उसका कारण था यज्ञ के आदि में ही भूल हो गई थी। और उस भूल का खमाज़ा तो उठाना ही था। क्या भूल हो गई? जिस रचयिता बाप को साकार रूप में सद्गुरु के रूप में मान करके चलना था उस सद्गुरु के डायरैक्शन पर चलते रहना चाहिए था; लेकिन नहीं चले। तो ब्रह्मा भी निंदा के पात्र बन गए। संसार में ब्रह्मा की पूजा नहीं होती,मंदिर नहीं बनते, मूर्तियाँ नहीं बनती; क्योंकि रचयिता के कंट्रोल से बाहर हो गए। यहाँ नए चित्र में जो लिखा हुआ है- विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति माना अपने उस जीवनकाल में जो पद उनको पाना था वो पद नहीं पाय सके। पद का विनाश हो गया। मम्मा ने 1965 और बाबा ने 1969 में शरीर छोड़ दिया। तो 65, 69 से लेकरके जब तक कृष्ण का जन्म नहीं होता है, वो पीरियड तो फिर उन्होंने नहीं देखा ना! बाबा तो बोलते हैं एक दिन भी कम नहीं तो ब्रह्माबाबा के तो उस हिसाब से कुछ वर्ष कम हो जाते हैं। माना वो इसी शरीर से इन्हीं आँखों से स्वर्ग नहीं देखते। दूसरा जन्म ले करके स्वर्ग में जाते हैं। इसलिए विनश्यन्ति के लिस्ट में ये संगमयुग का पीरियड दिखाया कि विनाश को पा गए।

विनाशकाले परमपिता शिव के साथ प्रीत बुद्धि विजयन्ति

40 वर्ष पूरे हुए और 40 वर्ष पूरे होने के बाद रिजल्ट तो निकलना ही था। वो पुराना ग्रुप विनश्यन्ति के स्टेज में पहुँचा। और जो ग्रुप यज्ञ के आदि में ही चला गया था उस ग्रुप का विजयन्ति की लिस्ट में आना शुरू हुआ। राम और राम के पीछे जितने भी फॉलोवर्स थे वो ग्रुप ऊपर दिखाया गया है।

मु. में कहा है -"प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई पुरुषोत्तम सृष्टि रची जाती है। पुरुषोत्तम तुमको वहाँ देखने में आवेंगे।"(मु.1.10.75 पृ.1 मध्य) यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। शरीर रूपी पुरी में सोने वाली जो भी आत्माएँ हैं, उनमें उत्तम ते उत्तम हर धर्म में माला के रूप में नम्बरवार सिमरी जाने वाली मणकों की मालाएँ कौन-2 सी हैं, कौन-2 आत्माएँ नम्बरवार हैं वो अभी प्रत्यक्ष होती है, जबकि कलियुग का अंत और सतयुग का आदि होने वाला है। मु. में बोला है-"पुरुषोत्तम वर्ष, पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन भी इस पुरुषोत्तम संगम पर ही होता है। पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी इस पुरुषोत्तम युग में है। यह बहुत छोटा लीप युग है।" (मु.4.5.74 पृ.2 मध्य) इसी संगमयुग का ही गायन, पूजन, यादगार, त्यौहार, शास्त्र आदि भक्तिमार्ग में चलता है। इसलिए मु.में कहा है- "संगम पर जो प्रैक्टिकल होता है उसकी यादगार भक्तिमार्ग में त्योहारों के रूप में मनाते हैं।" (मु. 26.8.69 पृ.2 अंत)

1976 के बाद विजय को प्राप्त करने वाली आत्माएँ सीढ़ी में ऊपर दिखाई गई हैं। जिन्होंने अपन को आत्मा समझा, बेसिक नॉलेज के बतौर आत्मा के बाप सुप्रीम सोल को याद किया तो याद करने के कारण उनकी बुद्धि खुल गई। आत्मा की बेसिकली सारी कट उतर गई और वे बाप से डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ने लगे। उनको ऊपर दिखाया गया है। यह आत्माएँ निमित्त बनी हुई हैं। 40 वर्ष का संगमयुग पूरा होने के बाद मन-बुद्धि की स्टेज से सतयुगी दुनिया में, सतयुग की सुख की दुनिया में, तीरी पर बहिश्त पाने की दुनिया में प्रवेश कर जाती हैं। पहले जो घोषणा करते थे-'श्रीकृष्ण आ रहे हैं।' श्रीकृष्ण कोई बच्चे के रूप में नहीं आ रहे हैं। तीरी पर बहिश्त का मतलब बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग लिए हुए। जैसे हथेली पर कोई चीज़ रख ली जाए और देखी जाए। उसी तरीके से बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग रखा हुआ है। ऐसे स्वर्ग को देखने वाला श्रीकृष्ण आ रहा है। यह वही श्रीकृष्ण है जो सतयुगी सीढ़ीयों से बाहर ऊपर के संगमयुग में दिखाया गया है। यह संगमयुग का वो भाग है जहाँ से मन-बुद्धि के स्तर पर स्वर्ग की,नई हीरे जैसी दुनियाँ की शुरूआत होती है, उन आत्माओं के लिए जो बुद्धि से सम्पन्न स्टेज पर पहुँच जाती हैं। जिनके लिए 40 वर्ष पूरे होते हैं, जिनके लिए 10 वर्ष की घोषणा की गई थी। ये 40 वर्ष का संगमयुग है। उसके बाद ब्राह्मणों की पुरानी दुनियाँ का विनाश और नई दुनियाँ की स्थापना होगी। तो उन मरजीवा बनने वाली श्रेष्ठ आत्माओं के लिए

पुरानी दुनियाँ खलास। आप मुए मर गई दुनियाँ। पुराने ब्राह्मणों की दुनियाँ से कोई वास्ता नहीं रहा; क्योंकि समझ लिया यह तो नष्ट होने वाली है।

चार कुमार-तीन कुमारियाँ

इस ग्रुप को रामायण के हिसाब से राम या राम सहित चार भाई दिखाये गये हैं अथवा ब्रह्मा के 4 पुत्र जो सबसे पहले मानसी सृष्टि से उत्पन्न हुए थे। सबसे बड़े पुत्र। उन्हें सृष्टि की आरम्भ की परिक्रिया में शास्त्रों में दिखाया गया है अथवा कृष्ण के सखाओं के रूप में भागवत में इन्हें दिखाया गया है। (मनसुखा , सुदामा , बलराम)
बाबा ने मु. में कहा है- “वहाँ (त्रेतायुग में) राम को 4 भाई तो होते नहीं। वहाँ तो बच्चा भी एक होता है। 4 बच्चे तो होते नहीं।” (मु.29.9.77 पृ.1 मध्य) तो ये जो चार कुमार के रूप में यहाँ दिखाये गये हैं - ये वास्तव में जो चार मुख्य धर्म बाबा बताते हैं- देवता धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्धी धर्म और क्रिश्चियन धर्म। इन 4 मुख्य धर्मों के क्रमशः बीज बनने वाली आत्माएँ राम,भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। ये चार आत्माएँ चार धर्मों के बीज हैं जो यहाँ दिखाई गई हैं।

अष्टरत्न, आठ नारायण, अष्टदेव की आत्माएँ अलग हैं

अब तक यज्ञ में ये समझा जाता था कि जो आठ नारायण हैं वो अष्ट रत्न हैं; लेकिन आठ नारायण के साथ तो आठ नारायणियाँ भी लगी हुई हैं, तो 8 और 8 =16 हो जाते हैं। वो (नारायण)अष्ट-नौ रत्नों की गिनती में नहीं हैं; क्योंकि वो नारायण कम कलाओं वाले तथा कम जन्म लेने वाले नारायण हैं। जो सातवाँ, आठवाँ नारायण होगा उसकी तो कलाएँ ही कम हो जावेंगी। जिनकी कलाएँ कम हो जावेंगी वो रत्नों में तब आ सकते हैं जब वो रत्नों में प्रवेश करते हैं। 9 रत्न तो अपने धर्मों की बीजरूप आत्माएँ है, 108 की माला में 12-12 के ग्रुप की मुखिया हैं और एक दूसरे से कम वैल्यु वाले और पूरे 84 जन्म लेनेवाली आत्माएँ हैं। जो पास विद् ऑनर आत्माएँ हैं वो अपने धर्मों के पूर्वज हैं, शिव की अष्टमूर्तियाँ, अष्ट दिग्पाल, अष्टदेव हैं। नारायण वाली आत्माएँ तो जड़ों पर दिखाई जाने वाली आधारमूर्त आत्माएँ हैं जो नं.वार कम जन्म लेती हैं। इन जड़ों के जो बीज हैं वो सीढ़ी में ऊपर दिखाए गए हैं। ये बीज सबसे सशक्त, पॉवरफुल बीज हैं और इनको क्रम से एक दूसरे के पीछे नम्बरवार खड़े हुए दिखाया है; क्योंकि जो धर्म सबसे पहले होता है वो तो पावरफुल होता है और जो बाद वाला होता है वो कमजोर डाली होती है तो उसी क्रम से इनको खड़ा हुआ भी दिखाया गया है- देवता, इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन।

रुद्रमाला-विजयमाला

ऊपर सीढ़ी में एक तरफ़ से कुमार निकल रहे हैं, काले दरवाज़े से और गोरे दरवाजे से कुमारियाँ निकल रही हैं। काले दरवाजे से जो दिखाये गये, यह हैं रुद्रमाला के मणके, घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहकर पवित्रता का पुरुषार्थ करने वाले। जो रानियाँ दिखाई गई, वो अंदर का परकोटा दिखाया गया। माना गोरा दरवाजा, सरेंडर वर्ग। आप देखेंगे इस्लामी को दूसरे नम्बर पर साथ में खड़ा हुआ दिखाया गया है, काले कपड़े पहने हुए। उसके पीछे भरत और शत्रुघ्न को भी दिखाया गया है। इसके अलावा इस ग्रुप को काले दरवाज़े से निकलता हुआ दिखाया गया है। जबकी कुमारियों का जो ग्रुप है पीछे की ओर दूसरी तरफ़ उसे गोरा दरवाज़ा दिया गया। वो तो बात बाबा ने मुरली में बताय ही दी कि- पुरुष जितने भी होते हैं वो सब दुर्योधन, दु:शासन की वृत्ति वाले होते हैं। कन्याएँ, माताएँ जो होती हैं, वो द्रोपदियाँ, सीतायें और पार्वतियाँ होती हैं। तो एक तरफ़ यहाँ सीढ़ी के चित्र में पहले-2 प्रत्यक्ष होने वाला ग्रुप दिखाया गया है- रुद्रमाला का ग्रुप। उसमें भी मुख्य आत्माएँ। और जो बाद में प्रत्यक्ष होने वाली माला है वो दूसरा ग्रुप है - विजयमाला का। जो अ.वाणी 21.1.69 पृ.24 आदि में बोला है- • “भारतमाता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।” उन दोनों ग्रुप्स के आपस में मिलने से मुरली में बोला है कि- “रुद्रमाला बाद होती है विष्णु की माला।.....यह रुद्रमाला फिर विष्णु की माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं।” (मु.20.2.72 पृ.3 आदि) अर्थात् रुद्रमाला के मणके नम्बरवार विजयमाला में पिरोये जायेंगे। उसी समय सफलता हो जाती है; क्योंकि

प्रवृत्ति मजबूत हो जाती है। प्रवृत्ति की गाँठ जुड़ती है तो सफलता हो जाती है। भारत में कोई भी ऐसा अनुष्ठान नहीं मनाया जाता जिसमें पति-पत्नी की गाँठ जोड़ के कार्य ना किया जाए। जब तक गाँठ नहीं जोड़ी जाती तब तक कोई अनुष्ठान सफल नहीं माना जाता। वो रुद्रमाला एक तरफ़ है। ये है लंगड़ों की माला। काहे के लंगड़े? पवित्रता के लंगड़े; क्योंकि इनमें सेंट परसेंट वही मनुष्य आत्माएँ ब्राह्मण बनी हुई दिखाई गई हैं जो घर-गृहस्थ के कीचड़ से इकट्ठी होती हैं। जैसे कोई किला होता है, तो किले की 2 दीवाले होती हैं अर्थात् 2 परकोटे होते हैं। एक बाहर का परकोटा और एक अंदर का परकोटा। तो सरेंडर्ड वर्ग जितना भी है वो सब अंदर के परकोटे में और जो नॉन सरेंडर्ड वर्ग है वो सब घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहने वाला वर्ग।

मुरलियों में बाबा ने इशारा दे दिया था कि - "जो बाहर वाले गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं यहाँ वालों से बहुत तीखे चले जाते हैं।"(मु.18.11.68 पृ.2 अंत) अर्थात् अंदर वाले ऊँच पद पाने से रह जावेंगे और बाहर वाले ऊँच पद पा जावेंगे। एकलव्य का मिसाल दिया। ये बात तो सही साबित हो गई कि जो घर-गृहस्थी के कीचड़ में रहने वाले हैं उनको परमात्मा पहले उठा लेता है। जो पतित हैं, नीचे गिरे हुए हैं, जिनमें पावनपने का अहंकार नहीं है, उनको परमात्मा ऊपर उठाता है। राजा बनने वाली आत्माओं की जो लिस्ट है, द्वापर से ही विदेशियों के संग के रंग लगने से पवित्रता के लंगड़े हैं, वो ही आत्माएँ सारी रुद्रमाला में इकट्ठी होती हैं। पहले-2 रुद्रमाला तैयार होती है। उसके बाद विजयमाला तैयार होती है राजाओं की माला रुद्रमाला के मणके क्या हैं नं.वार जन्म जन्मान्तर के राजा बनने वाली आत्माएँ। राजाएँ कभी किसी के अधीन नहीं हो सकते। इनके अंदर अधिकार पने के संस्कार हैं। और रानियाँ जन्म जन्मांतर अधीन रहीं। उनमें वह अधिनता के संस्कार माना अंदर रहने वाले।

बाबा ने मु. में कहा है- "तुमको रुद्रमाला में पिरोना है।......यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला।" (मु.8.3.73 पृ.3 मध्य) "तुम जान गए हो सबसे अच्छा पार्ट उनका है जो पहले शिव की रुद्रमाला में हैं। नाटक में जो बड़े अच्छे-2 एक्टर्स होते हैं, उनकी कितनी महिमा होती है। उनको देखने लिए लोग जाते हैं।" (मु.20.2.71 पृ.1 मध्यादि) "विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है; लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना यही खुशनसीबी है।" (अ.वा.20.5.74 पृ.47 आदि)

प्लैनिंग पार्टी, प्रैक्टिकल पार्टी ये है एडवान्स पार्टी का पहला ग्रुप जिसे कहेंगे प्लैनिंग पार्टी। यानी इनकी बुद्धि बड़ी तीखी है। रुद्रमाला के शरीर तो अपवित्र हैं। इसलिए शरीर से पवित्रता न होने के कारण कोई विशेष सफलता हासिल नहीं कर सकते; क्योंकि प्योरिटी के बग़ैर प्रैक्टिकल सम्पन्न नहीं हो सकता। प्रैक्टिकल स्वर्ग स्थापन तब तक नहीं हो सकता जब तक प्रैक्टिकल पार्टी नहीं निकलती है। जो प्रवेश करने वाली आत्माएँ हैं, मम्मा, बाबा, मनमोहिनी दीदी जैसी आत्माएँ वो हुई इन्स्पिरेटिंग पार्टी। वो दोनों में ही इधर प्लैनिंग पार्टी में भी प्रवेश करती हैं तो उधर प्रैक्टिकल पार्टी में भी प्रवेश करती हैं। उनको इन्स्पिरेट करती हैं। उनका उमंग-उत्साह बढ़ाती है। तीसरी पार्टी वो है प्रैक्टिकल पार्टी जो प्योरिटी की पॉवर से कार्य को प्रैक्टिकल पूरा करती है। ऐसी जो आत्माएँ हैं वो लास्ट में निकलती हैं। सूर्यवंश-चन्द्रवंश सीढ़ी में एक तरफ़ दिखाया गया है कृष्ण का ग्रुप और दूसरी तरफ़ दिखाया गया है राधा का ग्रुप। कृष्ण को मुरलियों में बताया हुआ है- सूर्यवंशी और राधा को चंद्रवंशी बताया हुआ है। सूर्यवंशी जो होंगे वो अपने को ज़रूर ऊँच समझते हैं और चंद्रवंशी इतने ऊँच कुल के नहीं हैं। मुरली में बोला है- ये भी एक मूँझ हो गई है। "(संगमयुगी) राधे-कृष्ण तो प्रिंस-प्रिंसेज थे। दोनों अपनी-2 राजधानी में रहते थे। ज़रूर स्वयंवर होगा (जैसा कि सीढ़ी के चित्र में ऊपर विजयमाला लिये हुये राधा को कृष्ण के सामने दिखाया भी गया है)। राधे-कृष्ण का (अपना) राज्य तो है नहीं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराना है। चंद्रवंशी में तो सूर्यवंशी कृष्ण आ न सके (क्योंकि ऊँच कुल का है)। तो बड़ी मूँझ हो गई है।" (मु.10.5.73 पृ.3 मध्यादि) ब्राह्मणों की दुनियाँ में ये मुँझान क्या हो गई? कि हम चाहते तो हैं, एक धर्म, एक राज्य, एक वंश की स्थापना और यहाँ हो क्या गया? दो वंश हो गए। ये कैसे हुए दो वंश? दो वंश का क्या सवाल? वंश की शुरूआत ज़रूर किसी व्यक्ति से होती होगी। व्यक्ति के नाम के आधार पर वंश का नाम पड़ता है। जैसे रघुवंश, कोई राजा रघु हुआ तब तो रघुवंश कहा गया। यहाँ सूर्यवंश नाम पड़ता है तो ज़रूर ज्ञानसूर्य का प्रैक्टिकल में पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी भी होना चाहिए और चन्द्रवंश नाम

पड़ता है तो ज़रूर ज्ञान चन्द्रमा का शीतल पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी व्यक्ति भी होना चाहिए। शिवबाबा ही त्रिनेत्री शंकर द्वारा ज्ञानसूर्य और ब्रह्मा द्वारा ज्ञानचंद्रमा के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। सूर्यवंश का ज्ञानसूर्य के रूप में पार्ट बजाने वाला जो पार्टधारी है वो प्रजापिता ब्रह्मा की जब आयु 100 वर्ष 76 में पूरी हो जाती है तो वही आत्मा जो आदि ब्रह्मा था वो ही ज्ञान सूर्य के रूप में उदित हो जाता है। सन् 76 से ज्ञानसूर्य प्रगटा और अज्ञान अंधेर विनाश। मुरलियों में जो बातें अज्ञानता के रूप में प्रतिभासित होती हैं, जिनका पूरा क्लैरिफिकेशन पहले नहीं मिलता है उनका क्लैरिफिकेशन बाद में मिलना शुरू हो जाता है। सन् 76 से ज्ञान सूर्य के प्रकाश की शुरूआत हो जाती है। उससे पहले यज्ञ में ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश चल रहा था। ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश तो शीतल होता है। शीतल ज्ञान के प्रकाश में तो कीड़े-मकोड़े भी पलते रहते हैं, जब तक शीतल चन्द्रमा की किरणें होंगी तब तक तो वो कीड़े-मकोड़े चलेंगे; लेकिन सूर्य जैसे-जैसे प्रखरता प्राप्त करता जावेगा वैसे-वैसे कीड़े-मकोड़े खलास होते जावेंगे। ऐसे ही यहाँ भी सन् 76 से, जब से ज्ञान सूर्य के द्वारा एडवान्स पार्टी का ये पार्ट शुरू होता है तो उसी समय से बीजरूप आत्माओं का कार्यकाल भी प्रत्यक्ष रूप में शुरू सारे ब्राह्मण परिवार में होता है और उसमें जो कीड़े-मकोड़े जैसी आत्माएँ हैं जो कि ज्ञान की रोशनी में रहना पसंद नहीं करतीं वे खलास होती जाती हैं। उनका एडवांस पार्टी में कोई सक्रिय स्थान नहीं रहता। ये सूर्यवंशी ज्ञान सूर्य परमात्मा से डायरैक्ट जन्म लेने वाले बच्चे हैं। जो चंद्रवंश दिखाया गया है वो ज्ञान सूर्य से डायरैक्ट जन्म नहीं लेते बल्कि ज्ञान चन्द्रमा से डायरैक्ट जन्म लेने वाली आत्माएँ हैं। चन्द्रवंशी ज्ञान चन्द्रमा के शासन काल में पलने वाली आत्माएँ हैं। ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा के द्वारा ब्राह्मणों की जो वंश परम्पराएँ स्थापन हुई हैं उस परम्परा में पलने वाली आत्माएँ हैं, उनके डायरैक्शन पर चलने वाले। जैसे दीदी-दादियाँ हैं उनकी रहबरी में पलने वाली आत्माएँ हैं। उस वंश परंपरा में जो रोटी दाल तक के अधीन हुए पड़े हैं। उनका अपना अलग से कोई विचार नहीं हो सकता। वो हैं- चन्द्रवंशी। ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा और उनके द्वारा जितने भी सेंटर्स स्थापन हुए उन सेंटर्स में पालना लेने वाली जो भी आत्माएँ हैं, वे पहले तो ज्ञान चन्द्रवंशी आत्माएँ हो गई। सूर्यवंशी आत्माएँ वो हैं जो ना तो ज्ञान चन्द्रमा का आधार लेती हैं और ना ही किसी व्यक्ति या गुरु का आधार लेती हैं। बल्कि वो सिर्फ ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव की ज्ञान मुरलियों का आधार लेने वाली आत्माएँ हैं। वो सूर्यवंशी यहाँ सीढ़ी में बांई ओर दिखाये गए हैं। मतलब ये है कि जो बाप का पार्ट है वो गुप्त पार्ट हो जाता है और बच्चों को प्रत्यक्ष करता है। ब्रह्मा की रात द्वापर-कलियुग कही गई है। उसमें ज्ञान सितारे प्रत्यक्ष होते हैं। एक तो ज्ञानसूर्य की औलाद जो सिर्फ़ ज्ञानसूर्य को मानने वाले हैं। और दूसरे हैं, जो सूर्यवंशी हैं वो किसी देहधारी के अधीन नहीं हैं। वो है तो एक परमात्मा ज्ञानसूर्य शिव की श्रीमत पर चलने वाली आत्माएँ। सूर्यवंशी कृष्ण चन्द्रवंशी राधा के पास जा न सके सूर्यवंश और चंद्रवंश - यह दो वंश हो गए। सूर्यवंशी कृष्ण तो ऊँच कुल का ठहरा। वह तो चंद्रवंश में जा न सके। भारत के ब्राह्मणों में अभी तक भी यह परम्परा है कि जो ऊँच कुल वाले होते हैं वो कन्या के यहाँ नहीं जाते; लेकिन कन्या पक्ष वालों को वरपक्ष वालों के यहाँ जाना पड़ता है। इसलिए बाबा मुरली में बोलते हैं "कलियुग में भी जो रीति-रसम होते हैं वह सभी यहाँ संगम पर किस न किस रूप में होते हैं।" (मु.14.5.70 पृ.2 मध्य) यही बात मुरली में बताई कि- कृष्ण ऊँच सूर्यवंशी कुल का और राधा चंद्रवंशी। कृष्ण ऊँच कुल का है इसलिए वह तो चंद्रवंश में जा न सके। इसलिए राधा को आना पड़ता है। आती है, कृष्ण की बागों में खेलती है। मु. में कहा है-"राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर उनके साथ प्यार हो गया। ऐसे नहीं, राधे-कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं, अलग-अलग थे। राधे आती थी, फिर स्वयंवर हुआ। राधे-कृष्ण कोई भाई-बहन नहीं थे, दोनों अलग-2 अपनी-2 राजधानी में थे।"(मु.14.7.73 पृ.3 मध्य)

"ल.ना. और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग-2 राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों आपस में भाई-बहन थे। वह अलग अपनी राजधानी में थी, वह अलग अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो ल.ना. बनते हैं।"(मु.26.10.73 पृ.2 मध्य) •"राधे-कृष्ण ही फिर ल.ना. बने हैं; परंतु वह बच्चे किसके थे, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण की महिमा की है, राधे की कहाँ है! दोनों अलग-2 गाँव के प्रिंस-प्रिंसेज़ थे। ..... बगीचे में घूमने-फिरने जाती थी। फिर ड्रामा अनुसार उन्हों की आपस में दिल लगती है और सगाई हो जाती है। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद ल.ना. बनते हैं।"(मु.13.11.71 पृ.2 अंत) यहाँ कोई स्थूल बागों की

तो बात नहीं, न ही स्थूल फूलों की बात है। खेलना मतलब ज्ञान रत्नों से खेलना। वह संगमयुगी राधा का पार्ट बजाने वाली आत्मा जो चन्द्रवंशी है अर्थात् चन्द्रमा के कुल में जो पल रही है, वह जब आती है तो एकदम आ करके सरेंडर नहीं हो जाएगी। पहले वह ज्ञान रत्नों से खेलेगी। कहते हैं- कृष्ण से स्नेह हो गया, प्रीति हो गई तो इस तरह ये संगमयुगी राधा-कृष्ण की बात है। धीरे-2 उनका स्नेह, प्रेम हो जाता है और बाद में उनका स्वयंवर कर दिया जाता है। तब दोनों वंश मिल करके एक हो जाते हैं। चंद्रवंशी राधा सूर्यवंशी कृष्ण से मिल करके एक वंश की हो जाती है। अभी तक भी भारत में ये परम्परा है- कन्याएँ किसी भी कुल की हों; लेकिन वे वर पक्ष में पहुँच करके उसी कुल की हो जाती हैं। इस तरह दोनों कुल मिल करके सूर्यवंशी एक कुल बनता है और सूर्यवंश की स्थापना हो जाती है। क्या कृष्ण द्वापर में आया? कृष्ण को द्वापर में दिखाते हैं। वास्तव में यह यहाँ की बात है। मु. में कहा है-"द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिंधी आदि बैठ दिखाए हैं। वास्तव में इस समय सब हैं राक्षस सम्प्रदाय।" (मु.10.10.73 पृ.3 मध्य) संगमयुग में बाप की याद करने से हम ऊपर चढ़ते हैं। याद करते-2 जो भी आत्माएँ ऊँची सीढ़ी चढ़ने लग पड़ती हैं, अगर वे द्वापरयुग की सीढ़ी से ऊपर वाली सीढ़ी पर कदम रखेंगी तो उनके अंदर एक विशेष शक्ति आती है। वह शक्ति भी कोई एकदम नहीं आती, धीमी-2 गति से आती है; क्योंकि आगे भी ऊपर और सीढ़ियाँ चढ़नी है। उस स्टेज को सम्पन्न स्टेज नहीं कहेंगे। मुरली में बाबा ने बोला है- जब तुम बच्चे त्रेतायुग की सीढ़ी चढ़ने लगेंगे तो डिसचार्ज होना बंद होने लगेगा। दिल और दिमाग़ के अंदर उस शक्ति के आरोपण होने से उमंग-उत्साह दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ेगा। वो उमंग-उत्साह फिर कम नहीं हो सकता। जो कृष्ण वाली सोल है वह उसी स्टेज में पहुँचने लग पड़ती है; क्योंकि यहाँ पर कृष्ण की ये गर्भ अवस्था दिखाई गई है। पहले गर्भ में होगा फिर बाद में प्रत्यक्ष होगा। गर्भावस्था भी क्लीयर है और प्रत्यक्ष होने का टाइम भी क्लीयर है। भारतीय परम्परा में रात के 12 बजे कृष्ण का भी जन्म दिखाते हैं और रात के 12 बजे शिव की भी रात्रि बताते हैं। उसको जयंती नहीं कहते यानी शिव का जन्म नहीं दिखाते हैं; क्योंकि शिव तो निराकार है। वास्तव में सन् 1976 में बाप का जो प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया था, वो है राम बाप वाली आत्मा की प्रत्यक्षता का टाइम। जिसके बुद्धि रूपी गर्भ में कृष्ण की सोल प्रवेश कर जाती है। जैसे वहाँ बताते हैं कि कृष्ण का जन्म 9/10 महीने के बाद हुआ। 10 महीने पूरे हुए तब कृष्ण का जन्म हुआ। ऐसे ही यहाँ है फिर बेहद की बात। 10/12 साल का पीरियड जब पूरा होने वाला होता है, तब कृष्ण की सोल उस शरीर के द्वारा प्रत्यक्ष हो जाती है। एक तरफ़ द्वापर के आदि से ही कृष्ण की प्रत्यक्षता। और दूसरी तरफ़ बताया है कि 3/4 वर्ष के बाद चंद्रवंश में राधा का जन्म होता है। वो राधा यहाँ दिखाई गई। दोनों कुल का मेल होने पर एक वंश बन जाता है। कृष्ण का 8 वाँ नं. जन्मशास्त्रों में कृष्ण के लिए जो बातें आई हैं वह भी यहाँ लागू होती हैं। दिखाया है कि कृष्ण ने 8 वाँ नं. बच्चे का जन्म लिया। इसका मतलब है कि कृष्ण की प्रत्यक्षता होने से पहले ही कृष्ण जैसे 7 और बच्चे प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले चुके होते हैं। मु.में कहा है-"देवकी को आठवाँ नम्बर श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब आठवाँ नम्बर कृष्ण जन्म लेगा कब?.....सतयुग में। ..... सतयुग में कृष्ण के माँ-बाप को 8 बच्चे तो होते नहीं।......फिर दिखलाते हैं उनका बाप उनको नदी से पार ले जाता था।" (मु.18.8.72 पृ.2 मध्यादि, 3 अंत) सतयुग में तो आठ बच्चे पैदा होंगे नहीं। यह संगमयुग की ही बात है। जब संगम में ये सात नारायण प्रत्यक्ष हो जाते हैं तो आठवाँ नम्बर कृष्ण की आत्मा यानी ब्रह्मा की सोल इस संगम के समय कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके कार्य करती है वो बात प्रत्यक्ष हो जाती है। चूँकि आठवें नम्बर पर श्री कृष्ण की प्रत्यक्षता होती है; इसलिए शास्त्रों में कृष्ण को आठवें नम्बर का बच्चा दिखाया गया है। वे सात नारायण पहले प्रत्यक्ष होते हैं, जो यज्ञ में बेसिक में पहले से ही हैं और उनके पार्ट भी प्रत्यक्ष होते हैं और आठवें नम्बर पर कृष्ण का प्रत्यक्षता रूपी जन्म होता है। कृष्ण जैसे सात बच्चों का जन्म तो हो जाता है; लेकिन उनको कंस अपनी अपवित्रता की मार से उनके स्वाभिमान को मार देता है। पनपने नहीं देता। वास्तव में कृष्ण जैसे 7 बच्चे वे कोई दूसरी आत्माएँ नहीं हैं, बल्कि वे 7 जो बाद वाले नारायण बनने वाली आत्माएँ हैं, जो दूसरे धर्मों में कनवर्ट हो जाती हैं, वे ही कृष्ण जैसे 7 बच्चे हैं, जिनके पार्ट सन् 1976 से ही प्रत्यक्ष होने लग पड़ते हैं। बाबा ने कहा है-"कौरव और यादव पहले प्रत्यक्ष होते हैं और पाण्डव बाद में प्रत्यक्ष होते हैं।" वे कृष्ण जैसे 7 बच्चे उनका प्रत्यक्षता रूपी जन्म तो पहले ही हो जाता है भल कंस उनको अपने काल के गाल में

लपेट लेता है। कैसे ? कंस अगर न मारता तो वो भी जिंदा रहते। ईश्वरीय यज्ञ में भाई भी अर्पण हुए। बहनें तो अर्पण हुई ही। जो अर्पण होने वाले भाई थे, उन्होंने तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सबकी बाजी लगाई और यज्ञ में आ गए; लेकिन जो रावण या कंस दिखाया जाता है, कंस का काम क्या था? कन्याओं को कोस लेता था। कन्याओं को कोसने वाले को ही कंस कहा जाता है। तो यज्ञ के अंदर कुछ ऐसी परिक्रिया चल पड़ी। पहली परिक्रिया दृष्टि का, वृत्ति का करप्शन हो गया। दृष्टि करप्ट होती है तो वृत्ति भी करप्ट होती है और कर्मेन्द्रियाँ भी करप्शन में लिप्त हो जाती हैं। तो वे अप्रत्यक्ष में सरेंडर्ड वर्ग की आत्माएँ हों, चाहे प्रत्यक्ष में प्रैक्टिकल में सरेंडर हुई हों। जैसे बाबा बताते हैं कि तुम अपने घर-गृहस्थ में रहते हुए भी ऐसे समझो कि हम सरेंडर हैं। दोनों प्रकार की आत्माएँ जिन्होंने जैसा भी पुरुषार्थ किया; लेकिन मूल बात तो है तन, मन, धन, समय, सम्पर्क और संबंध को ईश्वरीय कार्य में लगा देना। जिन आत्माओं ने एक तरफ़ सब कुछ लगाया और दूसरी तरफ़ फिर कंस के कुसावे में आ गई। कंस ने उनको अपने माया जाल में बाँध लिया। कृष्ण की सोल भी जन्म तो वहीं से लेती है। यानी ज्ञान में तो आती है; लेकिन उनके कुसावे में नहीं फँसती। कृष्ण बच जाता है। इसीलिए शास्त्रों में जो बात आई है मुरली में बाबा ने इसका इशारा दिया है कि - सतयुग में तो 8 बच्चे होते नहीं। कहते हैं कि कृष्ण ने 8 वाँ नं. (बच्चे) का जन्म लिया। तो ये बात बुद्धि में आ जाती है ये बात सतयुग की नहीं है। ये बात वास्तव में संगमयुग की है। जबकि कंस उन सात बच्चों को कोस करके अपने कंट्रोल में कर लेता है। 8 वाँ नं. कृष्ण कंस के कंट्रोल से बाहर हो जाता है। कंस का हाथ उसके ऊपर नहीं लग पाता और वह गाँवड़े में जा करके पलता है। इसलिए बाबा ने मु. में कहा है-“ (सीढ़ी में ऊपर) कृष्णपुरी और (नीचे) कंसपुरी। दिखलाते हैं कृष्ण को (विषय-वैतरणी नदी-यमुना के) उस पार ले गए। इस संगम की बात है। कृष्ण को उस पार नहीं ले गए। यह तो बेहद (ज्ञान) की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना।”(मु.17.11.72 पृ.3 आदि) इसलिए बाबा हमेशा कहते रहे हैं, गाँवड़ों की सेवा करो। गाँवड़ों के प्रति जैसे बाबा का बहुत प्यार है। गाँवड़े का छोरा। मु.में बोला है- “उनको कहा जाता है गाँवरे का छोरा। तो ताज कहाँ से हो सकता!... गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना। (मु.8.2.70 पृ.2 मध्य) कृष्ण को जो यहाँ दिखाया गया है, वो शास्त्रीय परम्परा से बाहर नहीं दिखाया गया। शास्त्रों में जो भी बातें दिखाई गई हैं वो सब इस समय की यादगार है। बस सिर्फ़ इतनी बुद्धि दिव्य बनानी है कि हम उन बातों को ज्ञान के आधार पर टैली कर सकें; लेकिन हमको ये भी ध्यान रखना पड़ेगा कि बाबा ने जो मुरली में बात बोली है, जो शास्त्रों के उदाहरण उठाए हैं, जो सार रूप में बातें उठाई हैं; क्योंकि परमात्मा शास्त्रों का सार आ करके ब्रह्मा द्वारा सुनाता है। (मु.31.7.73 पृ.2 अंत) •उन उठाई गई सार रूप बातों का ही विश्लेषण हम मन-बुद्धि से करें। जिस भूसे का वर्णन बाबा ने मुरली में नहीं किया है उसके ऊपर मनन-चिन्तन-मंथन न करने लग पड़ें। जब जरूरत होगी तो बाबा स्वत: ही शास्त्रों की जो बातें साररूप होंगी वो आगे बताते रहेंगे। एडवांस पार्टी का प्रारंभ एडवान्स पार्टी का 1976 से जब जन्म होता है, रामवाली आत्मा की राम बाप के रूप में जब प्रत्यक्षता होती है, उस समय विदेशी आत्माएँ- इस्लामियों का बीज, बौद्धियों का बीज और क्रिश्चियन्स का बीज उसे प्रत्यक्ष करने में विशेष सहयोगी बनती हैं। लेकिन नितांत शुरूआत में जहाँ यह बीज बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं, वही बाद में जा करके विरोधी भी बन जाते हैं; क्योंकि विदेशियों में उतना गहरा ज्ञान नहीं हो सकता, जितना भारतवासियों में गहरा ज्ञान हो सकता है। विदेशियों में उतनी प्योरिटी की पावर नहीं होती; इसलिए वो ज्ञान बुद्धि में ठहरता नहीं। वो जन्म-जन्मांतर के संग के रंग से कनवर्टेड विदेशियों के संस्कार संगमयुग में आड़े आ जाते हैं। वो संस्कार जब आड़े आ जाते हैं। पवित्रता वाली बात उनकी बुद्धि में असली रूप में गहराई तक बैठती नहीं और उसी बात में फेल हो जाते हैं। इस यज्ञ के अंदर शुरूआत से ले करके अपवित्रता के विघ्न आते रहे। वही अपवित्रता का विघ्न इन कनवर्टेड विदेशी बच्चों को अपनी गिरफ़्त में ले लेता है और ये बाप के पार्ट के ऊपर संशयबुद्धि बन जाते हैं और विरोधी भी बन जाते हैं।

भरत:- विदेशियों में से मुख्य बीज है- इस्लामी। वो भरत का पार्ट बजाने वाली आत्मा इस्लाम धर्म से कनेक्टेड होती है। यहाँ इस्लाम धर्म की बीज रूप आत्मा को काले कपड़े पहने हुए साथ में खड़ा हुआ दिखाया गया है। काले कपड़े कौन से धर्म में ज़्यादा चलते हैं? इस्लाम धर्म में। इस्लामियों में काम वासना, व्यभिचार के जो संस्कार होते हैं, तो बीज में भी वो छिलका ज़रूर चढ़ा हुआ होगा। इस

प्रकार वह आत्मा भी एक तरफ़ पार्ट बजाती है। कौन-सा पार्ट? हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-2; लेकिन उन विदेशी आत्माओं को यह पता नहीं है कि भारतीय परम्परा में भाई-2 की स्टेज क्या होती है। जो भारतीय परिवार हैं उनमें भाई-2 किसे कहा जाता है? ऐसे ही कहने के लिए कह देना भाई-2 और बाप को बाप के रूप में न मानना तो भाई-2 काहे का? भारत की परम्परा में तो बड़े भाई को बाप समान कहा जाता है। बाप तो बाप है ही; लेकिन बड़े भाई को भी बाप समान माना जाता है। राजाओं की जितनी भी पावर है वो बड़े भाई को सौंपी जाती है। बड़े भाई ही छोटे भाईयों की बच्चों की तरह परवरिश करते हैं। एडवांस की शुरूवात में जब तीन भाई सहयोगी बनते हैं, उस समय एक कन्या भी बाप की सहयोगी बनती है। जिसे साकार राम बाप यज्ञमाता का स्थान देते हैं। जो इस्लामी बीज है, वह एक तरफ़ तो ढोंग करता है कि ये हमारी माँ है और ये हमारा बाप है। और दूसरी तरफ़ माँ को अपने हाथ में भी कर लेता है, जो बाप के कंट्रोल में रहनी चाहिए। अगर बच्चा माँ को अपने कंट्रोल में कर ले और अपने तौर-तरीकों से चलाने लग पड़े, तो ऐसे बच्चे को क्या कहा जाएगा? आसुरी या ईश्वरीय बच्चा? आसुरी बच्चा। अगर बाप को बाप के रूप में भी न मानो, बड़े भाई के रूप में ही मानो, तो भी तो बहन हो जाती है। जब लिख करके देते हो कि हमारे माँ-बाप हैं। हम आपस में भाई-बहन हैं। तो फिर भाई-बहन का वो प्रैक्टिकल संबंध भी निभाना चाहिए। जब कि प्रैक्टिकल में परमात्मा आ करके प्रवृत्ति मार्ग के घर-गृहस्थ की स्थापना का फाउंडेशन डाल रहे हैं; लेकिन उसने धोखा दे दिया और जब उसी ने धोखा दे दिया और साथ में जिसको निमित्त बनाया गया यज्ञमाता के रूप में वह भी धोखा दे जाती है। तो जो बाप का पार्टधारी है वह भी ड्रामा प्लैन अनुसार बुद्धि में ये निश्चित कर लेता है कि इस माता में ही संस्कार थे उस इस्लाम धर्म के साथ जाने के। तभी तो इसने ऐसा पार्ट बजाया। इसको तो जगत् की माँ के आसन पर बैठाया गया; लेकिन इसने क्या काम कर लिया! उनकी जो बड़ी पूजा स्थली बनती है उसका नाम पड़ गया जा-मा-मिस-ज़िद 'जामा मस्ज़िद्'। ऐ माँ, कैसी माँ? जो मिस थी। माना शादी की हुई नहीं थी। तू जा। कैसी माँ है? जिद् करने वाली। अरे! जब परमात्मा के बन चुके तो इसमें ये जिद् क्या कि दूसरे भाई लोग ये कहते हैं कि तुम उस भाई राम वाली आत्मा के साथ अकेली रह सकती हो तो मेरे साथ क्यों नहीं रह सकती? इसलिए तुम हमारे पास भी आ करके क्लास कराओ। इस बात के लिए अगर जिद् कर गई तो उसको क्या कहा जाएगा? जायज या नाजायज? नाजायज कहा जाएगा। अगर किसी भी मनुष्य के साथ रह कर तुम पवित्र रह सकती हो तो दूसरे भाई कहते हैं, तुम हमारे पास भी आ करके पवित्र रह करके दिखाओ। ये ग़लत कहा ना। अरे! क्या कह देने से, लिख करके देने से कोई भाई-बहन हो जाते हैं? ये तो प्रैक्टिकल में जो तुमको एक के साथ जोड़ना है या अनेकों के साथ जोड़ना है? एक के साथ जोड़ना है। ऐसे ही बाबा ने कह दिया, तुम आपस में भाई-बहन हो तो भाई-बहन की तरह आपस में किसी भी ब्रह्माकुमारी के साथ सो सकते हो? रह सकते हो? फिर कोई बाबा के ऊपर उंगली उठाए कि बाबा क्यों रहता है? अरे! बाबा को तो लिखित रूप में दिया हुआ है। सरेंडर हुए पड़े हैं। तो बाबा अपने पास रखता है। बाबा ये थोड़े ही कहता है कि मैं पावन हूँ या कहता था? तो जो नाजायज आचरण है वो उन तीन विदेशी भाईयों के द्वारा अपना लिया गया और उसके कारण वो गुप्त भोगी भी बनते हैं। अगला लक्ष्मण को दिखाया गया है। वह बौद्ध धर्म से कनेक्टेड आत्मा है। बौद्धी जो होते हैं, वह इस्लामी और क्रिश्चियन के प्रभाव में आ गए। इसलिए बाबा मुरली में इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन तीनों को यादव बोल देते हैं; क्योंकि बौद्धी उनके प्रभाव में आ जाते हैं। जब प्रभाव में आ गए तो ना इधर की बोलेंगे ना उधर की बोलेंगे। इसका मतलब क्या हुआ? संशय में हैं। वह बौद्ध धर्म का पार्ट बजाने वाली आत्मा माना लक्ष्मण। वो बुद्धि से तो सहयोगी होती है; लेकिन उसके अंदर विदेशियों से मुकाबला करने की हिम्मत नहीं होती।

शत्रुघ्न:- चार कुमारों में भी जो सबसे छोटा वह सबसे जास्ती खोटा पार्ट बजाता है। कौन सा खोटा पार्ट बजाता है? भक्तिमार्ग में क्रिश्चियन्स में गिरजाघर बनाए जाते हैं। गिरजाघर बनने की परम्परा का फाउंडेशन भी संगमयुग में पड़ता है। वह जो छोटा सबसे खोटा वह सबसे ज़्यादा सक्रिय विरोध करता है और परमपिता परमात्मा 76 से जो घर-गृहस्थ की स्थापना का फाउंडेशन डालते हैं, उस फाउंडेशन में वह विघ्न रूप बन करके आड़े आता है। उसके सबसे जास्ती ये संकल्प चलते हैं कि- हे, भगवान के बने बनाए घर तू गिर

जा। सन् 1976 में जो स्थान बनाया जाता है, भगवान जो घर रचता है, घर कोई चार दिवारों को नहीं कहा जाता। कहते हैं- न गृहम् गृहम् इति उच्यते। गृहिणी गृहम् उच्यते। गृहम् ही गृहिणी हीनम्, अरण्य सदृशं मतम्।। अर्थात् गृहिणी को ही घर कहा जाता है। भगवान ने जो घर बनाया मतलब सहयोगी बनाया, उस घर को उस आत्मा ने उखाड़ दिया। एक/दो के संकल्प हो तब तो ठीक भी है; लेकिन जब संगठित रूप में सारे ही धर्म की जो मुख्य बीज आत्माएँ हैं, इकट्ठे हो करके एक ही संकल्प चलाएँगे तब (उनको) सफलता मिलती है। इस तरह वह बना बनाया घर जो फाउंडेशन में डाला जाता है वह गिर जाता है और उसकी यादगार में क्रिश्चियन्स की परम्परा में आज तक भी गिरजाघर बनाए जाते हैं। उन्होंने भगवान के बने बनाए घर को गिरा दिया। इसलिए उनके घर का नाम भी पड़ जाता है-'गिरजाघर'। यही कारण है कि चित्र में शत्रुघ्न वाली आत्मा की सहयोगिनी शक्ति को नहीं दिखाया गया है। चौथे नम्बर का भाई हाथ जोड़े हुए खड़ा हुआ है वो है - शत्रुघ्न। शत्रुघ्न का जो पार्ट बजाने वाली आत्मा है, वह क्रिश्चियन धर्म का बीज है। बाबा ने मुरली में कहा है- "मंसा में तूफान तो बहुत आवेगा; परन्तु कर्मेन्द्रियों से न करना है। कर्मेन्द्रियों से कर बैठे तो उन कर्मेन्द्रियों को काटा जावेगा। वह अंग काटा जावेगा। अगर दान देकर फिर किस पर क्रोध किया तो वहाँ जबान काटी जावेगी। धर्मराज बाबा घड़ी-2 इन्द्रियाँ कटवाते जावेंगे।" (मु.14.4.73 पृ.2 मध्य) जिन कर्मेन्द्रियों से जो-जो पाप किए वह-वह कर्मेन्द्रियाँ काटी जाएँगी। जिन्होंने कन्या-माताओं प्रति कुदृष्टि चलाई उनकी आँखें फोड़ी जाएँगी। जिन्होंने अपशब्द यूज़ किए उनका मुख बंद, उनकी जीभ काटी जाएगी। जिन्होंने जिन-2 कर्मेन्द्रियों से जो-जो विकर्म किए, वह-वह कर्मेन्द्रियाँ काटी जाएँगी और जिन्होंने बाहुबल चलाया तो भुजाएँ कट जाएँगी। बाबा ने बोला- ये धर्मराज की सजाएँ हैं। बोला है तो ज़रूर संगमयुग की ही बातें हैं ना! बाबा ने मुरली में कहा है-" योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश।"(मु.11.2.68 पृ.2 मध्यांत) "अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना। ऐसे जो माँ-बाप की आबरू गंवाते होंगे उनको फिर क्या पद मिलेगा ।"(मु.2.1.73 पृ.4 अंत) • जिसने बाहुबल का प्रयोग किया वो कौन से धर्म की आत्मा है? कौन सा ऐसा धर्म है जिसमें बाहुबल का प्रयोग किया जाता है? क्रिश्चियन धर्म में। जो क्रोधी होगा तो बाहुबल भी चलाएगा। हिस्ट्री में सबसे ज़्यादा क्रोध किस धर्म के अंदर होता है? क्रिश्चियन धर्म की आत्माओं में। जो क्रिश्चियन धर्म का बीज है, उसके अंदर भी वही गुणधर्म ज़रूर होगा।

सद्गुरु निन्दक ठौर न पावे

"बाप कहते हैं मैं सदैव परमधाम का रहने वाला हूँ। यह पुरानी दुनियाँ में आकर तुमको वरसा देता हूँ; फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब गाया हुआ है कि - सद्गुरु का निन्दक सूर्यवंशी राज्य में ठौर न पा सके।" (मु.13.11.72 पृ.3 मध्य) जो दूसरे धर्मों की तीन आत्माएँ हैं वो विधर्मी बीज होने के कारण डिस्ट्रक्टिव पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं। शुरू-शुरूआत की सतोप्रधान स्टेज में तो परमात्मा बाप के सहयोगी बनते हैं; लेकिन बाद में ये विरोधी पार्ट बजाने लग पड़ते हैं। विरोधी पार्ट बजाने के कारण इनको त्रेतायुग के अन्त में जाकर थोड़ी सी राजाई की ताज-पतलून मिल जाती है। बाकी ये त्रेता के आदि, मध्य में राजाई प्राप्त नहीं कर सकते। ये आत्माएँ पहले बाप को पहचानती हैं, बाप के कार्य में मददगार बनती हैं; लेकिन बाद में फिर विरोधी बन जाती हैं, डिससर्विस करने लग पड़ती हैं तो उस समय उनकी राजाई छीन ली जाती है और त्रेता के अन्त में जाकर राजभाग की अधिकारी बनती हैं। आदि स्थापना की इतनी श्रेष्ठ आत्माएँ जब विनाश का पीरियड होगा तो सुधर जाने के बाद ये सारे विश्व के चारों खंडों को कंट्रोल करेंगी। क्रिश्चियन्स का बीजरूप शत्रुघ्न क्रिश्चियन धर्मखंड को कंट्रोल करेगा। इस्लाम का बीजरूप इस्लाम धर्मखंड को कंट्रोल करेगा और बौद्धी का बीजरूप बौद्धी धर्मखंड को कंट्रोल करेगा; लेकिन इतनी श्रेष्ठ आत्माएँ होते हुए भी ये सतयुग में किसी जन्म में कोई भी प्राप्ति नहीं कर सकतीं। संगमयुग में तो ऊँच ते ऊँच प्राप्ति आदि सो अंत के हिसाब से करेंगी; लेकिन सतयुग की राज गद्दियों में इनको कोई पद नहीं मिलेगा। त्रेता में भी जो शुरूआत और मध्य की गद्दियाँ हैं उनमें कोई पद नहीं मिलेगा; क्योंकि सद्गुरु निंदक ठौर न पावे। ये संगमयुग का जो 21 वाँ जन्म सबसे ऊँच ते ऊँच प्रारब्ध पाने का जन्म है, इसमें भी ये दूर धर्मखंडों में फेंकी जाती हैं। भारत में इनको बाप के पास रह करके, सुख-शांति की दुनियाँ में रह करके शासन की सेवा करने के लिए कार्य नहीं मिलता। ये जो गायन है, वो इस समय संगमयुग का गायन है। सद्गुरु निंदक ठौर न पावे।

निंदा करायी तो नज़दीकी स्थान नहीं मिल सकता। दूर स्थान मिलेगा। त्रेता में भी पहली गद्दी राम की, तो आखिरी जो तीन गद्दियाँ हैं, जो स्वर्ग को काटने वाली गद्दियाँ हैं यानी स्वर्ग को खंडित करने वाली गद्दियाँ हैं। उस स्वर्ग को खंडित करने का काम भी किसने किया? परमात्मा आ करके जो घर-गृहस्थ रूपी स्वर्ग की स्थापना करता है, उसको उन्होंने खंडित करने का काम किया होगा। तब तो उन्हें खंडित गद्दियों की राजाई मिलती है। तो वो स्वर्ग के पतन के निमित्त बन जाती हैं। त्रेता के पतनोन्मुखी जो जन्म हैं उनमें जा करके उनको स्वर्ग की बादशाही मिलती है। इसलिए इनको पीछे की ओर खड़ा हुआ दिखाया गया है। राम का जो राजगद्दी का चित्र है उसमें भी आपने देखा होगा कि राम-सीता तो सिंहासन पर बैठेते हैं, बाकी जो तीनों भाई हैं वे दास-दासी के रूप में पार्ट बजाते हुए दिखाए जाते हैं। कोई चँवर डुला रहा है। कोई छत्र लिए खड़ा है। कोई पांव पखार रहा है इसीलिए बाबा कहते हैं कि अपनी चलन को सुधारो। जो पारिवारिक व्यवस्था शिवबाबा स्थापन करने के लिए आए हैं उसके अनुशासन को भंग मत करो। अगर अनुशासन को भंग करेंगे तो बाबा जानते हैं कि राजधानी स्थापन हो रही है। उसमें नम्बरवार हैं-दास-दासी भी चाहिए, चँवर डुलाने वाले, छत्र खड़े करने वाले, झाड़ू लगाने वाले सब चाहिए। मुरली में कहा है-"बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना।"(मु.10.12.68 पृ.3 मध्यांत)

ये हुआ सतयुग त्रेता के 21 जन्मों का हिसाब किताब। यहाँ सतयुग में आठ नारायणों की आठ गद्दियाँ दिखाई गई हैं। जिसके लिए मुरली में कहा है-"गाया भी जाता है सतयुग में सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी। जैसे- क्रिश्चियन घराने में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलता है। वैसे वहाँ भी लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड ऐसे 8 डिनायस्टी चलती हैं।"(मु.26.4.71 पृ.2 मध्य) "कृष्ण की 8 डिनायस्टी चलती है। पहले कहेंगे प्रिंस ऑफ सतयुग। फिर बनता है किंग ऑफ सतयुग। 8 पीढ़ी उनकी पहले चलती है। उस समय तो दूसरे राजाएँ होते नहीं।"(मु.6.9.81 पृ.2 अंत) "लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, दी सेकण्ड, थर्ड । आठ बादशाही चलती हैं। बच्चे राज्य करते हैं। सीता-राम का भी ऐसे चलता है।" (मु.31.7.73 पृ.2 मध्यांत) 8 जन्मों में जो नं.वार लक्ष्मी-नारायण बनने वाली आधारमूर्त आत्माएँ हैं, वे ही त्रेता में भी जा करके 8 जन्मों में उसी क्रम से राम-सीता बनती हैं; क्योंकि मुरली में बोला है-"यह अभी जानते हैं हम सो ल.ना. बनते हैं, हम सो राम-सीता बनेंगे।" (मु.25.5.72 पृ.3 मध्यांत) दूसरे वाक्य में बोला-जो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं वही राम-सीता बनते हैं। इसका मतलब हुआ जिस क्रम से ल.ना. बनते हैं, सतयुग में उसी क्रम से राम-सीता बनते हैं। ल.ना. बनने वाले 9 हैं। एक संगमयुग का और त्रेता में 12 गद्दियाँ हैं। तो पहली जो 9 गद्दियाँ हैं उनपर वही आत्माएँ आसीन होंगी, बाकी जो (तीन) खंडित गद्दियाँ हैं स्वर्ग के शासन को खंडित करने वाली, स्वर्ग को नष्ट करने वाली, उन गद्दियों के ऊपर आसीन होने वाली वे ही आत्माएँ होंगी जो घर के बच्चे बने, बाप के बच्चे बने; लेकिन बच्चे बनने के बावजूद भी उन्होंने बाप को धोखा दिया। बाप का मुँह काला किया। बाप की ग्लानि की। वे ही तीनों भाई त्रेता की अंतिम ध्वंसकारी गद्दियों में एडजेस्ट कर दिए जाते हैं। जो स्वर्गीय संगठन पहले जल्दी बनना चाहिए था उस परमात्मा के कार्य में इन्होंने विघ्न डाला और विघ्न डालने के कारण सारा कार्य स्थगित हो जाता है, देर में बनता है। तो वह स्वर्गीय संगठन जल्दी तैयार नहीं हो पाता है। उसका इनको दंड ये मिलता है कि त्रेता के अन्त में भी जाकर स्वर्ग के विघटन के निमित्त बनते हैं। स्वर्ग स्थापन करने के निमित्त नहीं बन पाते। ये आखिरी तीन सीढ़ियों के अधिस्थापक हैं। तो स्वर्ग की जो दुनियाँ है वो इनके द्वारा नष्ट होती है। सतयुग, त्रेता का तो ये हिसाब हुआ।

त्रेता का अंत

त्रेता के अंत में ये जो विघटन का फाउंडेशन पड़ जाता है, और वो ही फाउंडेशन आखिरी जन्म में आ करके बढ़ने लगता है। ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ उन्हीं बीजरूप आत्माओं के द्वारा जो जन्म लेने वाले आधारमूर्त हैं, उनमें प्रवेश करते हैं और प्रवेश करके विपरीत धर्मों की स्थापना शुरू हो जाती है। वो तो झाड़ के चित्र में बताया। लेकिन भारतवर्ष में इन धर्मों को नहीं दिखाया गया। भारत के उत्थान-पतन की कहानी जो सीढ़ी दिखाई गई है उसमें दूसरे धर्मों का कोई ज़िक्र नहीं है। वास्तव में ये जो चार कुमार अथवा रुद्रमाला के जो भी मणके

हैं वो तो देवी-देवता सनातन धर्म की पक्की आत्माएँ हैं; क्योंकि बीज हैं। बीज का कभी विनाश तो होता नहीं। 84 जन्म लेने वाले होते हैं। तो वो पार्ट भारत में ही बजाते हैं। जिस किसी भी जन्म में उनको राजा बनना होगा, जब बनना होगा तो भारत में ही वो राजा बनेंगे। दूसरे देशों में अगर राजाई का फाउंडेशन भी डालना है तो फाउंडेशन डाल के वापस फिर आ करके भारत में ही जन्म लेंगे।

पुरुषोत्तम संगमयुग में ही रावण राज्य की शूटिंग

यहाँ जो दिखाया गया है भक्तिमार्ग की सारी परिक्रियाएँ और परम्पराएँ ये उन्हीं आधारमूर्त और बीजरूप राजाओं की है जो रावण राज्य का फाउंडेशन डालने वाले हैं। झाड़ के चित्र में आपको बताया था कि लेट साइड में जो धर्म हैं,

डालियाँ हैं उनकी आधारमूर्त जड़े भी हैं। लेट साइड में दिखाई गई कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी। और उन जड़ों के कोई बीज भी हैं। जो बीज अंत तक गुप्त रहता है। जमीन के अंदर बोया जाता है। तो वो बीज भी है। यज्ञ के आदि में जब ये बीज बोए गए थे वो बीज विकारों में सड़ गए। धरणी में बोया हुआ बीज सड़ जाता है। अपने अस्तित्व को नष्ट कर देता है। लेकिन उसकी सारी शक्ति जड़ों से होते हुए वृक्ष में समा जाती है। और फिर बाद में वो ही बीज फल में 76 के बाद फिर प्रत्यक्ष होते हैं। उनमें नम्बरवार भी हैं, कोई देवी-देवता सनातन धर्म के बीज हैं, कोई देवी-देवता सनातन धर्म की जड़ें हैं और तो कोई विदेशी धर्मों की जड़ें हैं और बीज हैं। वो यहाँ सीढ़ी के आदि में दिखाया गया है जिस समय संगमयुगी ब्राह्मणों का नयी दुनियाँ की स्थापना का कार्यक्रम चल रहा होता है, उस समय परमात्मा स्वयं राम के साकार तन के द्वारा प्रत्यक्ष रूप में कार्य कराता है तो रामराज्य के जन्मों की शूटिंग होती है, चढ़ती कला की शूटिंग होती है और जब देहधारी धर्मगुरुओं के हाथ में शासनतंत्र आता है और परमात्मा गुप्त हो जाता है तो रावणराज्य की शूटिंग होती है। जिसके लिए अ.वा. में बापदादा ने कहा है-"84 जन्मों की चढ़ती कला (रामराज्य) और उतरती कला (रावणराज्य) उन दोनों के संस्कार इस (संगम के) समय आत्मा में भरते हो।"(अ.वा.30.5.73 पृ.77 अंत) सहज रूप में समझने के लिए पहले-पहले जो विस्तार रूप है वो समझ लेंगे; क्योंकि बीजरूप तो होता है छोटा। नजरों के सामने भी नहीं है उतना। आगे चल करके और उसका विस्तार हो जाएगा। जो झाड़ के चित्र में जड़ों के भागों में जितने भी लेट साइड के नारायण रूप आधारमूर्त दिखाए गए हैं, वो ही बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ब्राह्मणों की दुनियाँ में जंजीरें फैला रहे हैं। जब तक बाबा जीवित थे, ब्रह्मा साकार में था, ज्ञानसूर्य की रोशनी ज्ञानचन्द्रमा में प्रत्यक्ष हो रही थी तब तक ब्रह्मा का दिन था। उनके शरीर छोड़ने के बाद ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा तो गुल्जार दादी में प्रत्यक्ष होता रहा; लेकिन उसमें से ज्ञान सूर्य वानप्रस्थी हो गया माना गुप्त हो गया और उसके बाद देहधारी धर्मगुरुओं रूपी रात के सितारों का शासन यज्ञ के अन्दर आ गया। इन देहधारी धर्मगुरुओं ने यज्ञ में रावण के रूप में संगठित हो करके ये सोने की जंजीरें फैलाना शुरू कर दिया और उन सोने की जंजीरों में सारे ब्राह्मण और ब्राह्मणों की दुनियाँ को अच्छी तरह से बाँध लिया। उनके द्वारा ये भक्तिमार्ग की परम्पराएँ चलायी जाती हैं। जिन परम्पराओं पर चलने से मनुष्य नीचे गिरते जाते हैं। चलाने वाले गुरु लोग खुद भी नीचे गिरते चले जाते हैं। मुरली में कहा है-"वास्तव में गुरु तो एक ही होता है सद्गति के लिए। बाकी सभी हैं दुर्गति के लिए।"(मु.11.3.69 पृ.1 मध्य) "यह ढिंढोरा पिटवाते रहो- एक सद्गुरु निराकार द्वारा सद्गति, अनेक मनुष्य गुरुओं द्वारा दुर्गति।" (मु.11.3.69 पृ.1 अंत) बाबा के शरीर छोड़ने के बाद, परमपिता परमात्मा के साकार पार्ट के समाप्त होने के बाद भक्तिमार्गीय रावण राज्य की शूटिंग कैसे होती है वह यहाँ इस चित्र में सीढ़ी के उत्तरार्ध में दिखाया गया। मुरली में भी बाबा ने बोला है कि- द्वापर जब आरंभ होता है, त्रेता का अंत होता है तब त्रेता के अंत में जिन बीजरूप आत्माओं का राज्य होता है वो दूसरे धर्मों की होती हैं- इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन। जो देवताएँ हैं; 'यथा राजा तथा प्रजा', उस गति को पकड़ती हैं और लास्ट जन्म में आ करके उसमें से ज्यादातर प्रजा त्रेता के अंत में दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होना शुरू कर देती है। द्वापरयुग की शुरूवात में इस्लाम धर्म सबसे पहले-2 आया। मुरली में बोला हुआ है - रावण जबसे आते हैं सत्ता में ब्राह्मणों की दुनियाँ में कहो चाहे 2500 वर्ष की उस दुनियाँ में कहो। इब्राहिम जबसे आया, रावण जबसे आया तबसे भारत में आपस में भारतवासियों में लड़ाई शुरू हो गई। •"रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्रॉविंस (ज़ोन) अलग कर देते

हैं।" (मु.8.8.68 पृ.3 मध्यांत) •"त्रेता और द्वापर के संगम पर रावण आते हैं जबकि देवी-देवताएँ वाममार्ग में गिरते हैं।" (मु.10.10.68 पृ.1 अंत) क्योंकि वो आत्माएँ आ करके दृष्टि-वृत्ति को करप्ट करती हैं और उस समय राम और राम की जो भी सहयोगी आत्माएँ होती हैं, वो उस करप्शन को पसंद नहीं करती। लिहाज़ा संघर्ष हो जाता है और उन इस्लामियों को वहाँ से खदेड़ करके दूर अरब खंड की ओर भगा दिया जाता है। वो अरब देशों में जा करके बड़ी तीव्रगति से व्यभिचार फैलाते हैं जैसे कि झाड़ के चित्र में बताया था और दुनियाँ में चारों तरफ़ छा जाते हैं। ऐसे ही यज्ञ के अंदर भी हुआ। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद जो जनरेशन ब्राह्मणों की दुनियाँ में बढ़ी है वो विदेशों में सेवाकेंद्र खुलने के बाद शुरू हुई है। पहला पहला सेवाकेंद्र लंडन में खुला। और वहाँ से तीव्रगति से विदेशों में सेवा शुरू हो गई।

रावण राज्य के प्रमाण

(1) **त्रेता अंत का अर्ध विनाश**:- रावण राज्य का पहला प्रूफ है कि-जब स्वर्ग समाप्त होता है, त्रेता का अन्त होता है तो द्वापरयुग के शुरूआत में, रावण राज्य के एकदम आरम्भ में भूकम्प आता है और ज़मीन के हिलने से देवताओं के संगठन के रूप में जो महल-माड़ियाँ हैं, वे ज़मीन में समा जाती हैं और सृष्टि का आधा विनाश हो जाता है। त्रेता के अन्त में सृष्टि का आधा विनाश भूकम्प के द्वारा होता है; क्योंकि उस समय विकारी प्रवृत्ति का रावण राज्य शुरू होता है और उस समय देवताओं के वाममार्ग में जाने से स्वर्ग नष्ट हो जाता है। आधा विनाश होता है पूरी सृष्टि का विनाश नहीं होता है। यानी भूकम्प आता है और जमीन के हिलने से वो महल-माड़ियाँ (भूगर्भ में) समा जाती हैं। इसकी यहाँ शूटिंग होती है कि- त्रेता के अंत के बाद फिर डिस्ट्रक्शन शुरू हो जाता है। धरती कंप होता है। भूकम्प में ये हुआ कि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद जो मम्मा के प्यार में चलने वाली कन्याएँ-माताएँ रूपी धरणी थीं, वे हिल गईं और इनके हिलने से इनके आधार पर चलने वाले जो जिज्ञासु थे, वे टूट प़डे। कुछ तो इसलिए हिले कि उनको ज्ञान का डोस पूरा नहीं मिला। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के भी शरीर छोड़ने के बाद जो एकमात्र बाबा के प्यार में चलने वाली आत्माएँ थीं, वे भी हिल गईं और टूट पड़ीं और उनके आधार पर चलने वाले जो भाई बहन लोग थे, वो भी टूट पड़े। उस समय प्रत्येक ब्राह्मण के दिल और दिमाग के अंदर मुरलियों में बताई हुई बाबा की 100 वर्ष आयु को लेकर माया के भूकम्प अर्थात् संशय उठ रहे थे जिनका सही समाधान तत्कालीन अज्ञानान्धकार फैलाने वाले मनुष्य गुरुओं के पास नहीं था। अत: सन् 1965/66 से 68 के बीच ढेर के ढेर ब्राह्मण वत्सों की ज्ञान यज्ञ से अकालमृत्यु हो गई। इस तरह यज्ञ के अंदर एक बड़ा विनाश हो गया। मम्मा-बाबा ने शरीर छोड़ा तो परमात्मा गुप्त हो गया। उनका रथ ही समाप्त हो गया तो परमात्मा गुप्त हो गया और परमात्मा के गुप्त होने से इन देहधारी धर्मगुरुओं का शासन शुरू होता है और रावण का राज्य शुरू होता है तो विकारी वृत्तियाँ यज्ञ के अन्दर आरम्भ हो जाती हैं; क्योंकि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद ब्रह्मा बाबा तो पुरुष तन है और पुरुष तन तो होते ही हैं दुर्योधन-दु:शासन। उनको कंट्रोल करने वाली कोई ऐसी शक्ति नहीं रही और जिसने कंट्रोल किया वो कोई आसुरी शक्ति कुर्सी पर आ गई जिसके कारण ब्रह्मा बाबा का चित्त डुलायमान हो गया। बाबा ने वाणी में ये कहा हुआ है कि "राजाएँ जब शूद्र बनते हैं तो मन्दिर बनाते हैं। विकारी राजाएँ ही मन्दिर बनाते हैं।

(2) **सोमनाथ स्थापना** :-बाबा ने मुरली में कहा है-"देवी-देवताएँ वाममार्ग में आते हैं तो सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं।" (मु.19.8.73 पृ.1 मध्य) तो पहला-2 मंदिर बना द्वापरयुग का सोमनाथ मंदिर। • "भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर बनता है। सो भी कुछ समय बाद में बनता होगा, फिर पूजा शुरू होगी।"(मु.24.8.73 पृ.2 मध्य) जैसे 5000 वर्ष की ड्रामा की शूटिंग 60/65/100 वर्षों में होती है। इसी तरह वहाँ के 100 वर्ष यहाँ के एक वर्ष। जैसे ही मम्मा ने सन् 1965 में शरीर छोड़ा और 65 के बाद ही सन् 1966 में सोमनाथ मंदिर की स्थापना ब्रह्मा के द्वारा होती है। द्वापरयुग में राजाएँ विकारी होते हैं। विकारी राजाओं को अपनी अक्ल तो उतनी होती नहीं कि क्या करें, क्या न करें ? यह दु:ख पैदा क्यों हुआ? विकारी होते हैं तो दु:ख पैदा होता है। तो उनको राय देने वाला कोई दूसरा होता है। इसी प्रकार द्वापरयुग के आदि में उन विकारी राजाओं को ज़रूर किसी ने राय दी है कि इस दु:ख से तुम छुटकारा कैसे पा सकते हो। राजा विक्रमादित्य को किसी ने राय दी कि तुम निराकार की उपासना करो, मंदिर बना करके उसकी पूजा करो, तो तुम्हारे मन को शांति मिलेगी। वह पालड़ी

सेवाकेन्द्र सतयुगी शूटिंग की रजोप्रधान अवस्था में स्थापन किया जाता है, अहमदाबाद में जो पुराना पालड़ी सेवाकेंद्र था वो मधुबन की धनसंपत्ति लगाकर खोला था। इससे पहले बाबा ने कभी भी यज्ञ की सम्पत्ति से किसी सेवाकेन्द्र की स्थापना नहीं की थी। बाकी दूसरे जितने भी सेवाकेंद्र हैं वो सब दूसरे दूसरे व्यक्तियों के निमित्त बनने के बाद खोले गए थे। उन व्यक्तियों ने बाबा को निमंत्रण दिया था कि हमारे यहाँ आकरके सेवाकेंद्र खोलो; हम सब व्यवस्था करेंगे। जिसके लिए बाबा ने 12.12.83 की अव्यक्त वाणी में कहा है- "गुजरात में बापदादा ने सेन्टर खोला है। गुजरात ने नहीं खोला है। इसलिये न चाहते भी सहज ही सहयोग का फल निकलता ही रहेगा। आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। धरनी सहयोग के फल की है।"जो पालड़ी सेवाकेंद्र है वो सोमनाथ मंदिर साबित हो जाता है। जो द्वापरयुग के आदि में स्थापन किया जाता है और कलियुग की शूटिंग में विधर्मियों के द्वारा नेस्तनाबूत, नष्ट कर दिया जाता है। लूट लिया जाता है। पहले-2 मंदिर किसने बनाया? राजा विक्रमादित्य, तो उसकी पत्नी भी होगी। वे पहले-2 युगल थे जिन्होंने पहले-2 पूजा की शुरूआत की। जो इब्राहिम वाली सोल आई उससे प्रभावित हो गए; ज़रूर खुद वाममार्ग में गए हैं, इसलिए मंदिर बनाते हैं; क्योंकि मुरली में कहा है-"जो सम्पूर्ण निर्विकारी होकर जाते हैं उनके मंदिर बनाकर विकारी लोग उनकी जाकर पूजा करते हैं।" (मु.16.10.73 पृ.1 आदि) नर से प्रिंस बनने वाले ब्रह्मा की सोल राजा विक्रमादित्य ने पहले-2 पूजा शुरू की। • "पूजा भी पहले-2 तुमने शिव की की हैं। तब ही तो सोमनाथ का मंदिर बनाया है।" (मु.11.2.68 पृ.3 मध्य) रावण राज्य की दुनियाँ में रावण राज्य को साबित करने वाली ये दूसरी शूटिंग हुई। ये हुआ रावण राज्य की शुरूआत का दूसरा प्रूफ।

(3) **<u>जड़ चित्रों की प्रदर्शनी का भक्तिमार्गीय पॉम्प एण्ड शो</u>**:-रावण राज्य का तीसरा प्रूफ ये है सोमनाथ मंदिर बनने के 200/ 300 साल के बाद यानी द्वापरयुग शुरू होने के 300/ 400 वर्षों के बाद तक ढेर के ढेर चित्र बनाये जाते हैं। यज्ञ के अंदर बाबा ने हमेशा यही डायरैक्शन दिया - "बच्चे इन चार चित्रों को छत इतना ऊँचा-2 बनाओ।" मु.11.2.68 पृ.3 अंत में ये बात आई है कि "बाबा तो कहते हैं छत जितनी बड़ी सीढ़ी बनाओ। ऐसे ट्रान्सलाइट हो जो क्लीयर दिखाई पड़े। तो मनुष्य देख वंडर खावें।" बड़े-2 चित्र बनाओ। इन चार चित्रों में सारा ज्ञान समाया हुआ है। जास्ती चित्र बनाने की दरकार नहीं है। जास्ती चित्र बनाने से टू मेनी क्वीन्स का पहाका हो जायेगा। यदि किसी राजा को बहुत रानियाँ होती हैं तो सारी बुद्धि उन रानियों में ही खप जाती है। वो शासनतंत्र क्या चलायेगा? ऐसे ही अनेक चित्रों में बुद्धि जाने से बुद्धि फिर विस्तार में चली जाती है। विस्तार में जाने वाली बुद्धि सार में नहीं टिकेगी। ऐसे ही यज्ञ में हुआ। बाबा ने बोला है- माया के मत पर ढेर के ढेर चित्र बनाये। "बहुत चित्र होने से मनुष्यों का खयालात सारा चित्रों में ही चला जाता है। .....पहाका है न टू मैनी क्वीन्स....। (मु.23.2.69 पृ.2 अंत रामराज्य में ऐसे ढेरों चित्रों को बनाने की दरकार नहीं है। वहाँ तो गिने-चुने चार चित्र हैं- लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता। इन चार चित्रों के आधार पर ही वहाँ का सारा ठाठ-बाट चलता है और यहाँ तो ढेर के ढेर चित्र तैयार हो गए। मुरली में कहा है-"चित्र आदि जो भी बनाये हैं बेसमझी के।" (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य) बाबा ने बोला है- "आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं।" (मु.5.5.68 पृ.1 मध्य) माया का थोड़ा इशारा मिला और उन भक्तिमार्गीय रावण राज्य के गुरुओं ने और ढेर के ढेर छोटे-2 प्रदर्शनी के चित्र खास मायावी नगरी के महाराष्ट्र में तैयार कर दिये। जैसे 2500 वर्ष की मायावी दुनियाँ में क्राइस्ट के आने के समय, आज से 2000 साल पहले आसुरी मत पर महाराष्ट्र साइड में अजन्ता-एलोरा, एलीफैन्टा, कन्हेरी आदि की गुफाओं में ढेर के ढेर सैंकडों, हजारों चित्र तैयार किये गये थे।

ऐसे ही यज्ञ के अंदर द्वापरयुग के आदि में ही ढेर के ढेर चित्र - 300/400 (3/4) वर्ष के बाद तक ये चित्र बनते रहते हैं। तो 300/400 वर्ष इज़ इक्वल टू 3/4 वर्ष। यानी मम्मा के शरीर छोड़ने के 3,4 साल पूरे हो जाते हैं और यज्ञ के अंदर प्रदर्शनी के ढेर के ढेर चित्र बनकर के तैयार हो जाते हैं। कहाँ बनते हैं ? वो ही महाराष्ट्र साइड में माया की नगरी बम्बई में और वो ही आत्मा निमित्त बनती है जो प्रदर्शन करने वाली है। इनके अंदर प्रदर्शन करने का माद्दा है। वरना भारतीय परम्परा ज्ञान और योग को प्रदर्शन करने वाली नहीं है। ये ज्ञान-योग को प्रदर्शित करने की, दिखावा करने की परम्परा तो विदेशियों से आई। जबकि क्राइस्ट ने जन्म लिया था। श्रीमत के बरखिलाफ वो चित्र भी

तैयार हो गये। इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है- प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। ..... फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु.13.6.72 पृ.2 अंत) बाद में फिर (बाबा ने) शरीर छोड़ दिया। पास करना धरा रह गया। मतलब बाबा ने कहा है कि - पास करेंगे। तो कोई न कोई रूप में बाबा तो पास करेंगे ही। जो चित्र ठीक नहीं होंगे उनको कैंसिल कर देंगे। जो ठीक होंगे उनको पास कर देंगे; लेकिन बाबा ने अपने जीवनकाल में पास नहीं कर पाया। शरीर छोड़ गये। और राय बाबा ने नहीं दी। माने छोटे-2 ढेर के ढेर चित्र तैयार करने की बाबा की श्रीमत नहीं थी। तो ज़रूर मन मत है। कोई माया की मत है। माया को बेटी कहते हैं। मुरली में बोला है- "माया को क्या कहते हैं? बेटी।" तो कोई माया बेटी की मत पर ये ढेर के ढेर चित्र बनाये गये। ब्रह्मा बाबा का तो माँ का पार्ट था। अगर बच्चों से माँ, जो विधवा माँ हो गई हो और बच्चों से आँखें तरेर के बात करे तो बच्चे तो उसके ऊपर हावी हो जायेंगे। तो बाबा तो शुगर कोटेड वाणी बोलते थे। बाबा ने कहा- ये तो रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। तो बच्चे ने समझ लिया, आहा! बाबा हमको बहुत ऊँची स्टेज पे बैठाय रहे हैं। ये नहीं पता था कि हम श्रीमत का उल्लंघन कर रहे हैं। इस तरह वो ढेर के ढेर चित्र रावण सम्प्रदाय के द्वारा तैयार कर लिए गये।

मम्मा अगर जीवित होती तो ढेर के ढेर चित्र नहीं बनवाने देती। उनकी तो चार चित्रों पर ही आस्था थी; लेकिन मम्मा जो ज्ञान की देवी थी वो चली गई। ब्रह्मा बाबा को तो उतना ज्ञान की गहराइयों का पता नहीं था। उनके अन्दर तो शिवबाबा बोलता था इसलिए वो ज्ञान सुनाते थे। जो देहधारी गुरु थे, उस माया रावण ने किसी व्यक्ति को यह मत दी कि तुम ढेर के ढेर चित्र बनाओ ताकि तुम्हारा मान-मर्तबा बढ़े और तुम्हारे आधार पर हमारा भी बढ़े। ये हुई रावण राज्य की तीसरी मन्जिल। उसके 300/400 वर्षों के बाद यानी 66 से 69 तक के 3/4 वर्षों तक शूटिंगकाल में ये चित्र बनते रहे।

(4) **<u>शास्त्र निर्माण</u>**:- इसके तुरन्त बाद, अजंता, एलोरा, एलिफेंटा, कन्हेरी आदि गुफाओं के चित्रों के आधार पर भक्तिमार्ग में ढेर के ढेर शास्त्र बनाए जाते हैं। मुरली में कहा है-"ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते , फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे, तब फिर शास्त्र बनावें। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ वर्ष बाद में बैठ शास्त्र बनाए हैं।"(मु.9.8.64 पृ.3 अंत) बाबा ने बताया है-'बड़े-2 मोटे-2 वेद ग्रंथ शास्त्र रचे गए। जैसे भक्तिमार्ग में बड़े-2 पुराण रचे गए। भागवत्, महाभारत महापुराण, योगवाशिष्ट आदि।' वैसे ही शूटिंग कालीन ब्राह्मणों की दुनिया में 'एक अद्भुत जीवनकहानी','महाभारत','योग की विधि' आदि मोटे-2 ग्रन्थ बनाए गए।

(5) **<u>गीता का भगवान</u>**:- बाबा कहते हैं- बड़े ते बड़ी भूल है गीता के भगवान की। सभी शास्त्रों में मुख्य शास्त्र है 'श्रीमद्भगवद्गीता।' मुरली में कहा है-"भक्तिमार्ग में पहले सर्वशास्त्रमयी शिरोमणी गीता ही बनती है। गीता के साथ फिर भागवद, महाभारत भी है। यह भक्ति भी बहुत समय के बाद शुरू होती है। आस्ते-2 मंदिर ठिकाने शास्त्र बनेंगे। 3/4 सौ वर्ष लग जाते हैं।"(मु.2.9.72 पृ.1 मध्य) गीता में सबसे बड़ी भूल क्या कर दी? गीता ज्ञान दाता कौन है? निराकारी स्टेज वाला है। उसकी जगह साकारी स्टेज वाले, जिसका कोई भी फोटो आज तक निराकारी स्टेज का नहीं देखा जा सकता। जैसे इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरु नानक आदि धर्मपिताओं की निराकारी स्टेज दिखाई जाती है; जिसका निराकारी स्टेज का चित्र है ही नहीं, उस साकार अवस्था में रहने वाले का चित्र भागवत में जैसे डाला गया वैसे ही श्रीमत् भगवत् गीता में भी डाला गया है। हमारी भगवत् गीता है 'मुरली।' मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद मुरलियों में लगातार 'पिताश्री' शब्द डाला जाने लगा। 'श्री' शब्द बाद में इसलिए लगा हुआ है कि ये बाद में श्रेष्ठ बनने वाला है। पिताश्री ब्रह्मा लिखा जाता है। उनका नाम डाल दिया। गीता ज्ञान का बीजारोपण करने वाला कौन था? वास्तव में गीताज्ञान सुनाना शुरू किसने किया? शिवबाबा ने प्रजापिता के थ्रू। उस प्रजापिता का नाम-रूप सब गायब कर दिया। बाप की जगह ब्रह्मा बच्चे का नाम डाल दिया। रचयिता की जगह रचना का नाम डाल दिया। 'पिताश्री' नाम ब्रह्मा का। ब्रह्मा तो रचना है। बाबा के समय की जो मुरलियाँ थीं उनमें किसी का नाम लिखा हुआ नहीं है।

'शिवबाबा याद है' ये लिखा हुआ है। अब जबसे मम्मा ने शरीर छोड़ा तब से मौका लगते ही देहधारी धर्मगुरुओं ने बाबा की नज़रों से बचाकर 'शिवबाबा याद है' के पहले 'पिताश्री' शब्द जोड़ दिया-'पिताश्री शिवबाबा' यानी पिताश्री शिवबाबा हो गया। परमात्मा की जगह उन्होंने पिताश्री का नाम डाल दिया। पिताश्री का नाम डालने से क्या हुआ कि वो सारी वाणी ब्रह्मा की हो गई। ये बड़ी भारी भूल हो गई। राम बाप की जगह बच्चे, ब्रह्मा/कृष्ण का नाम डाल दिया। रावणराज्य के शुरू में दुनिया की सबसे बड़ी भूल यह हुई कि निराकारी स्टेज वाले शिवशंकर भोलेनाथ रचयिता जगत्पिता की जगह 84 के चक्र में आने वाले देहधारी बच्चे 'श्रीकृष्ण' रूपी रचना का नाम संस्कृत की गीता में डाल दिया गया। इसका फाउंडेशन संगमयुग में तब पड़ना शुरू होता है जब 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में सन् 1965 से 1968 के बीच द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम 'पिताश्री' सच्ची गीता (मुरलियों) के फ्रंट पेज पर 'शिवबाबा याद है' से पहले छापना आरम्भ कर दिया गया। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि बाद में श्रेष्ठ बनने वाले पिता+श्री ब्रह्मा ही शिव के साकार रूप गीता का भगवान रचयिता हो गये, जबकि ब्रह्म+माँ तो जगत्पिता की पहली रचना रूपी बड़ी माता है। जो खुद ही भूले हुये हैं वे दुनियावी धर्मगुरुओं की भूल कैसे सुधारेंगे? 'पहले घर का सुधार, फिर पर का सुधार।' मुरली में कहा है-"जीवन कहानी में ही नाम बदल लिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है।" (मु.7.8.74 पृ.3 आदि) "गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है।" (मु.8.7.73 पृ.2 मध्य)

(6) **बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम**:- इसी प्रकार और-2 शास्त्र बने। जो श्रीमद् भागवत कथा है भक्तिमार्ग में उसमें 16000 रानियों को भगाने की कथा सुनायी गई है। जिस काम के आधार पर उसका नाम रखा गया- 'भागवत' ऐसे ही यहाँ संगम में भी एक पुस्तक देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा लिखी गई- 'एक अद्भुत जीवन कहानी' कहानी माना कथा। जैसे 16,000 गोपियों को भगाने का अद्भुत काम है ऐसे ही 300/400 रानियों को कैसे सिंध-हैद्राबाद से कराची तक भगाया गया-वो कहानी उस अद्भुत जीवन कहानी में दी हुई है; लेकिन उस श्रीमत् भागवत् कथा में जो असली भगाने वाला था निराकार परमपिता परमात्मा, निराकारी स्टेज वाला, उसका नाम तो गुम कर दिया गया और कृष्ण का नाम डाल दिया गया। रूप भी वही डाल दिया गया उसी कृष्ण का। ठीक ऐसे ही यज्ञ के अंदर भी हुआ। उस पुस्तक के अंदर पहले ही पृष्ठ पर कृष्ण की सोल ब्रह्मा का नाम-रूप डाल दिया गया। बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम-रूप डाल दिया। ये भूल हो गई। संगमयुग में ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में प्रकाशित 'एक अद्भुत जीवन कहानी' के प्रथम पृष्ठ पर कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम और रूप 'पिताश्री' डाल दिया गया। गीता ज्ञान का बीजारोपण करने वाला कौन था? वास्तव में गीता ज्ञान सुनाना शुरू किसने किया? क्या सिंध हैदराबाद में 300/400 कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत कार्य बूढ़े दादा लेखराज (पिताश्री) ने किया था या करनकरावनहार निराकारी सो साकारी शिव ने यह कार्य सम्पन्न किया था? शिवबाबा ने प्रजापिता के थ्रू यह कार्य सम्पन्न किया था; उस प्रजापिता का नाम-रूप सब गायब कर दिया। अद्भुत जीवन कहानी में जो कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत् कर्म किया गया है वो वास्तव में प्रजापिता राम बाप की कहानी है। मुरली में भी बाबा ने बोला हुआ है-"भारत को पूरा कलंकित कर दिया है। .... इतनी रानियाँ थीं, उनको भगाया, मक्खन चुराया, इतने बच्चे थे। वास्तव में यह सभी है प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। उसके बदली कृष्ण को रख दिया है।" (मु.5.5.73 पृ.1 आदि,अंत) •"मटकी फोड़ी माखन खाया यह सब उसके लिए झूठ बोलते हैं।" (मु.23.8.68 पृ.3 आदि) ऐसे ही यहाँ यज्ञ के अन्दर भी नाम डाल दिया ब्रह्मा का और फोटो भी डाल दिया ब्रह्मा का। और नीचे लिखा हुआ है पिता श्री। बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम, रूप डाल दिया गया। तो पुस्तक पढ़ने वाले की बुद्धि में छाप ये ही पड़ेगी कि भगवान के सारे कृत्य, जो सारे चमत्कार हैं वो इस व्यक्ति ने किए हैं। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है।

(7) **शास्त्रों की शूटिंग का आडंबर**:- आगे यहाँ शास्त्र दिखाए गए हैं कि ढेर के ढेर शास्त्र बनाए जाते हैं। जैसे भक्तिमार्ग में बनाया गया 'योग वाशिष्ठ' मोटे-2 दो वॉल्युम हैं। उनमें राम और वशिष्ठ के बीच में दुनियाभर की कथा-कहानियाँ लेकर के संवाद लिखे गए और

नाम रखा योग वाशिष्ठ। उस मोटी सी पुस्तक को पढ़कर आत्मा विस्तार में जाएगी या सार बिन्दु में टिकेगी? विस्तार में ही चली जाएगी। इतनी मोटी पुस्तक, नाम है योग वाशिष्ठ और उसको पढ़ने से बुद्धि एकदम सारी दुनियाँ की कथा कहानियों में बिखर जाएगी। तो योग वाशिष्ठ हुआ या योग भ्रष्ट हुआ? जैसे वहाँ भक्तिमार्ग में योग वाशिष्ठ मोटा-2 ग्रंथ शास्त्र तैयार कर दिया, वैसे ही ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में इन देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा कोई व्यासजी महाराज ने एक पुस्तक लिखी-'योग की विधि और सिद्धि' और उस मोटी-सी योग की विधि और सिद्धि पुस्तक में ढेर के ढेर पतंजल योग-सूत्र, कपिलमुनि का सांख्य दर्शन, बड़े-2 और भी देहधारी गुरु जिनके योग के झूठे अनुभव उसमें लिख दिए गए। अपनी मनमत भी उसमें मिक्स की गई और बाबा की मुरलियों की भी कुछ बातें अपने तरीके से जैसे समझी वैसे मिक्स कर दी गई। मतलब खिचड़ा इकट्ठा करके उसे पैसे कमाने और नाम कमाने का साधन बनाकर काम में लाया गया। इस प्रकार भक्तिमार्गीय रावण राज्य के गुरुओं ने ऐसी ही अनेक शास्त्रों की शूटिंग का आडम्बर बना दिया। तो ऐसे-ऐसे लिट्रेचर इन भक्त लोगों ने संगम में छपाए। इन्ही ग्रन्थों के बीच जैसे एक और पुस्तक है- 'विश्व का भविष्य।' जैसे भक्तिमार्ग में लिखा गया- 'भविष्य पुराण।' अब उस विश्व के भविष्य को क्या करें जिसमें न ये बात बताई गई कि कृष्ण सतयुग में कब पैदा होगा, टोटल नई दुनिया कब आएगी, पुरानी दुनियाँ का विनाश का वर्ष कौन-सा होगा, तो जो मुख्य-2 बातें हैं विश्व के भविष्य की वो तो बताई नहीं गई। बताई भी तो वो ही देहधारी धर्मगुरुओं के आधार पर बताई। सूरदास का एक पद दे दिया - "संवत् 2000 के पीछे ऐसो जोग परे, उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम चहुँ दिस काल फिरे।" ऐसी-2 बातें उसमें इकट्ठी करके और लिख दिया गया- विश्व का भविष्य। अरे, बाबा ने तो विनाश की घोषणा मुरली में 76 में की थी। तुमने संवत् 2000 के पीछे ऐसे युग पर क्यों लिख दिया? देहधारी धर्मगुरुओं से प्रभावित हो करके? इस तालमेल का उन बेचारों को पता नहीं चला। तो वो विश्व का भविष्य ऐसे ही बन करके रह गया जैसे भक्तिमार्ग में भविष्य पुराण बन करके रह गया। उसमें सब मनोकल्पित राजाओं के नाम दिए और राजाओं की जो लम्बी वंशावली दिखाई गई है कलियुग के अंत तक की वो सारी झूठी साबित हो गई। ऐसे-2 ढेर के ढेर झूठे-2 वेद, शास्त्र, ग्रंथ उन व्यास जैसे महर्षियों के द्वारा लिखे जाते हैं, जो भगवान बन करके बैठते हैं। इसका मतलब ये हुआ कि वो 'विश्व का भविष्य' वास्तव में भक्तिमार्ग की ही तरह पैसे कमाने का एक साधन बना दिया गया। मुरलियों में बाबा ने क्या डायरैक्शन दिया- बच्चे छोटी-2 पुस्तकें छपाओ। आजकल लोगों के पास इतना टाइम नहीं है जो तुम्हारी विस्तार की बातों में जाएँ। ता.12.2.69 पृ.1 के अंत की मुरली में कहा है कि "भक्तिमार्ग में आधा कल्प से लेकर किसम-किसम के शास्त्र पढ़ते आए हैं। तुम यह छोटी किताब आदि छपाते हो मनुष्यों को समझाने लिए" मुरली में कहा है-"दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं!" (मु.24.5.64 पृ.1 मध्यांत) बाबा मम्मा जब तक जीवित रहे तब तक छोटी-2 पुस्तकें छपायी जाती रहीं। जैसे ही उन्होंने शरीर छोड़ा, उन देहधारी धर्मगुरुओं ने जो लोकेषणा से प्रभावित थे, लोगों में हमारा मान-सम्मान हो जाए, धनेषणा से प्रभावित थे, धन खूब अर्जन कर लें, ताकि दुनियाँ में हमारा नाम रोशन हो, ब्राह्मणों की दुनियाँ में रुतबा बना रहे, उन लोकेषणा और धनेषणा के पुजारियों ने खूब मोटी-2 पुस्तकें छपा दीं। जबकि श्रीमत्भगवत्गीता में कहा है-

यावानर्थ उदपाने सर्वत: सम्प्लुतोदके।

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानत: ॥ 2/46

सर्वत: (चारों ओर से) संप्लुतोदके (लबालब भरे हुए बड़े मानसरोवर के) {होने पर} यावान् (जितना) अर्थ: (प्रयोजन) उदपाने (पोखरे में रह जाता है), तावान् (उतना) {ही प्रयोजन} विजानत: (विशेष ज्ञानवान्) ब्राह्मणस्य (ब्राह्मण वत्स का) सर्वेषु वेदेषु (सब वेदों {ब्रहम वाक्य रूपी मुरलियों} में रह जाता है) {अर्थात् साक्षात् भगवान द्वारा सत्य ज्ञान मानसरोवर अर्थात् गीता ज्ञानामृत मिल जाने से वेद आदि पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं रहती}।

(8) **<u>अव्यभिचारी पूजा की शुरूआत</u>**:- ऐसे ही यहाँ सीढ़ी के मध्य में दिखाया गया है कि शास्त्रों के आधार पर फिर भक्तिमार्ग में बड़े-बड़े मन्दिर बनाए गए और उन बड़े-बड़े मन्दिरों में पहले-पहले तो एक अव्यभिचारी निराकार परमब्रह्म परमेश्वर परमपिता परमात्मा की यादगार एकलिंग शिव की पूजा, उपासना होती थी। जिसके लिए बाबा ने मुरली में कहा है-"पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं। उनके मंदिर बनाते हैं, फिर ल.ना. के बनावेंगे।... फिर राम-सीता के मंदिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में देखो- गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि-2 का अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं।" (मु.9.2.71 पृ.2 आदि) हमारे यज्ञ में भी इसकी शूटिंग हो रही थी। मम्मा-बाबा जब तक जीवित थे मेडिटेशन हॉल में सिर्फ एक शिवबाबा का चित्र शिवलिंग ही लगाया जाता था। मम्मा-बाबा के रहते स्वर्गीय शूटिंग में हरेक सेवाकेंद्र पर याद करने के लिए सामने की ओर शिवबाबा का ट्रांसलाइट का चित्र ही लगाया जाता था। दूसरा कोई चित्र स्मरणार्थ, महिमार्थ, दर्शनार्थ नहीं लगाया जाता था; क्योंकि चित्र तो लगाया ही जाता है महिमा करने के लिए, स्मरण करने के लिए, दर्शन करने के लिए ताकि याद आता रहे; लेकिन जैसे मध्य द्वापरयुग में आते-2 साकार देवी-देवताओं के चित्र बनने लगे, मूर्तियाँ बनने लगी और उनकी मंदिरों में स्थापना होने लगी, भगवान माना जाने लगा। ऐसे ही यज्ञ के अन्दर हुआ। जब तक मम्मा-बाबा जीवित रहे तब तक क्लास रूम के अन्दर सिर्फ शिव ज्योतिबिंदु का फोटो लगाया जाता था।

मुरली में बताया है-'पूजा उनकी होती है, जिन्होंने याद में रह करके कर्मेन्द्रियों से पवित्र कर्म किए है। अ.वाणी में बाबा ने बताया है- "जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसकी पूजा भी हर कर्म की होती है। (अ.वा.30.11.92 पृ.108 अंत) "जो कर्म याद में रहकर करते हैं वह कर्म यादगार बन जाता है।" (अ.वा. 28. 06. 73. पृ. 117 मध्यादि)

देवताओं की हर कर्मेन्द्रिय का पूजन दिखाया जाता है- कमल नयन कहते हैं, हस्त कमल कहते हैं; लेकिन शिव की हर कर्मेन्द्रिय का पूजन नहीं है। विशेष रूप से लिंग पूजन का महत्व है। तो उनकी ज़रूर पूजा होनी चाहिए। शिवबाबा ने ही आत्माओं को निराकारी बनाया है। आत्माओं को क्या निराकारी बनाया जाएगा? आत्माएँ तो होती ही हैं बिन्दु। आत्माएँ जो शरीरधारी थीं, जीवात्माएँ थीं, जो देहअभिमानी मनुष्य थे, उनको आत्माभिमानी बनाया। जो इन्द्रियों की स्मृति की रग पड़ी हुई थी वो छुड़वाई। हम आत्मा हैं, शरीर का भान छूट गया। तो जिसने निराकारी स्टेज में रहने वाला बनाया उसकी पूजा पहले होती है और फिर जो उस स्टेज में टिकने वाले नम्बरवार दूसरे देवताएँ निकले उनकी बाद में पूजा होती है। लक्ष्मी नारायण पहले देवता तैयार हुए जिनकी पूजा होती है। गीता में भी आया है :-

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रता: ।

भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ 9/25

देवव्रता: (देवताओं के भक्त) देवान् (देवताओं को) यान्ति (पाते हैं), पितृव्रता: (पितृभक्त) पितॄन् (पितरों-{माँ-बाप} को) यान्ति (पाते हैं), भूतेज्या: (भूतों के पुजारी) भूतानि (भूतों को) यान्ति (पाते हैं) {और} मद्याजिन: (मेरे में {त्न-मन-धन} यजन करने वाले) मां अपि यान्ति (मेरे {ईशित्व भाव} को ही पाते हैं)।

(9) **<u>युगल देवताओं की उपासना</u>** :- ऐसे ही संगमयुग में यज्ञ के अंदर मम्मा-बाबा के शरीर छोडने के बाद बाबा का एक बड़ा ट्रान्सलाइट का चित्र लगा दिया गया। मम्मा-बाबा ऐसे ही चित्र में चित्रित किये जाने लगे हेड ऑफिस में- ऊपर शिवबाबा ओर नीचे मम्मा-बाबा के चित्र। मम्मा-बाबा रूपी दिव्य आत्माओं के देहधारियों पुजारियों ने मम्मा-बाबा के चित्र लगा दिये। 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार सभी सेवाकेंद्रों में मम्मा-बाबा (ल.ना.) के इन युगलमूर्त जड़चित्रों की स्थापना हो गई। ऊपर शिवबाबा और नीचे मम्मा-बाबा के चित्र। जबकि खास देहरूपी जड़मूर्ति से बुद्धियोग तुड़वाने के लिए अवतरित शिवबाबा ने मुरलियों में यह स़ख्त डायरैक्शन दिया है-"इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है। .... इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं।" (मु.27.2.70 पृ.2 आदि) बाबा ने मुरली में

भक्तिमार्ग की निशानी बताते हुये कहा है-"भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के (सच्चे-2) मंदिर (अर्थात् सेवाकेंद्रों और संगमयुगी भक्तों के घर-2) में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। सभी के आगे सर झुकाते रहते हैं । (मम्मा-बाबा-दीदी-दादी आदि देहधारी) गुरुओं की भी मूर्ति बनाकर रखते हैं।" (मु.29.2.68 पृ.2 मध्य) इस तरह भक्तिमार्गीय रावण राज्य की व्यभिचारी शूटिंग की शुरूआत हो गई। जैसे भक्तिमार्ग में देहधारी देवताओं के चित्र पहले-2 बने। मन्दिरों में उन्होंने देहधारी देवताओं को चित्रित कर दिया, मूर्तियाँ बना दीं और उनकी व्यभिचारी पूजा होने लगी। शंकर-पार्वती की पूजा, लक्ष्मी-नारायण की पूजा। ऐसे ही हमारे यज्ञ में हो गया। एक शिवबाबा में बुद्धि न लगाय के तीन आत्माओं में बुद्धि लगा दी। तो व्यभिचारी याद हुई या अव्यभिचारी याद हुई? याद व्यभिचारी हो गई। इन देहधारी धर्मगुरुओं का ये करिश्मा है। ये मम्मा-बाबा की उपासना करने वाली प्रवृत्ति मार्ग की उपासना है वही यहाँ दिखाई गई है और जो उपासना करने वाले हैं, वे भी प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं, इसलिए उन प्रवृत्तिमार्ग वाले गृहस्थियों को ज़िम्मेवारी का ताज दिखाया गया है।

(10) **<u>सिंगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा</u>**:-उसके बाद दुनियाँ में और पतन हुआ, इधर ब्राह्मणों की दुनियाँ में जो प्रवृत्तिमार्ग की उपासना थी उसका भी खण्डन कर दिया गया। ब्राह्मणों की दुनियाँ में पहले-2 जो 16 कला सम्पूर्ण देवताओं की युगल पूजा होती थी, उसको फिर सिंगल बना दिया। जैसे-युगल अगर जा रहे हैं, तो युगल में किसी की दृष्टि-वृत्ति इतनी नहीं जाएगी; लेकिन अगर सिंगल जा रहा है तो जो एण्टीसेक्स वाले मेल या फिमेल की वृत्ति जा सकती है। इसके लिए मौका मिल सकता है। जैसे-रावण ने भी सीता को पहले युगल से सिंगल बनाया। तो यहाँ भी वही रावण सम्प्रदाय के देहधारी धर्मगुरुओं ने मेडिटेशन हॉल में से मम्मा का चित्र धीरे से खिसकाय दिया। उसे सौतिया डाह कहो, कुछ भी कहो। मम्मा को उन्होंने पसंद नहीं किया; क्योंकि यज्ञ में शासन तंत्र फीमेल्स का रहा या मेल्स का रहा? शासन तंत्र तो फीमेल्स के हाथ में है। भल बाबा ने शरीर छोड़ दिया, मम्मा ने शरीर छोड़ दिया। तो उन फीमेल्स ने मम्मा के चित्र को देखना पसंद नहीं किया। सौतिया डाह होता है न? वही अकेली कृष्ण कन्हैया की बनके रहेगी? मैं नहीं बन सकती कृष्ण कन्हैया की राधा? तो मम्मा का चित्र हटा दिया। अकेले कृष्ण कन्हैया का चित्र यानी ब्रह्मा बाबा का चित्र मेडिटेशन हॉल में लगाया। ये दोनों परम्पराएँ चली। कई सेवाकेन्द्रों में लक्ष्मी-नारायण के चित्र यानी मम्मा-बाबा के चित्र भी रहे और जो सिंगल पूजा से विशेष प्रभावित हुए, उन्होंने तो खास मम्मा के चित्र को हटा करके ऊपर शिवबाबा और नीचे ब्रह्माबाबा का चित्र लगा दिया। इस तरह और ही ज्यादा व्यभिचारी मनसा बनने से स्त्री वर्ग ने विशेष रूप से कृष्ण की पूजा करना शुरू कर दी। ऐसे तो काम वासना सबके अन्दर समाई हुई है। स्त्री को पुरुष तन अच्छा लगता है तो उन्होंने, सिंगल कृष्ण की पूजा शुरू की और पुरुषों ने अपनी मानसिक वासना पूर्ति के लिए अकेली देवी की पूजा शुरू कर दी। पूजा में भी इस तरह का व्यभिचार होता है। ऐसी जो तमोप्रधान पूजा है उसमें जैसे इस बात की बास आती है कि सिंगल पूजा क्यों? देवी-देवताएँ तो प्रवृत्तिमार्ग वाले थे। परमात्मा ने प्रवृत्तिमार्ग स्थापन किया। फिर सिंगल की पूजा क्यों शुरू कर दी? कृष्ण के साथ राधा क्यों नहीं? तो यहाँ दिखाया गया है कि रावण की वृत्ति क्या होती है? रावण सिंगल देखना चाहता है। अकेला करेगा तो उसका काम बनेगा और राम-सीता दोनों साथ होंगे तो उसका काम बनने वाला नहीं। इसलिए वो पंचवटी से राम को भगाने की चालबाजी करता है। जैसे द्वापर के मध्यांत तक सिंगल देवता कृष्ण की उपासना का आरम्भ हो गया ठीक वैसे ही हमारे स्त्रीबहुल यज्ञ में पुरुष चोले वाले ब्रह्मा की उपासना अधिक होने लगी। प्रत्येक सेवाकेंद्र से मम्मा का चित्र या तो हटा दिया गया या बहुत छोटे साइज में इधर-उधर रख दिया गया; क्योंकि युगलमूर्त देवताओं की अपेक्षा विपरीत लिंग वाली अकेली मूर्ति देहअभिमानियों को अधिक आकर्षित करती है। तो यहाँ सीढ़ी में द्वापर के मध्यांत में भी ये बात दिखाई गई है कि जिसका इण्टेन्शन नर्क बनाने का होगा वो सिंगल की उपासना करने वाला होगा। डबल की उपासना नहीं करेगा। जैसे देवी पूजा। द्वापर के मध्यांत में पहुँचते-2 सिर्फ़ सिंगल कृष्ण की ही पूजा नहीं होती। सिंगल देवियों की भी उपासना शुरू हो जाती है पुरुषों के द्वारा। इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है- देवी की उपासना करने वाले हैं (पुरुष) रावण सम्प्रदाय। अरे, तुम सिंगल देवी की पूजा क्यों करते हो? उसकी अकेली की मूर्ति बना करके क्यों रखते हो?

देवी है तो उसके साथ देवता भी तो होगा कोई। माता है, जय माता दी। और जय पिताजी कहाँ गए? (किसी ने कहा - माताएँ पवित्र रहीं असली।) माताएँ पवित्र रहीं तो पिता को उठा के कहीं नर्क में भेज दिया या स्वर्ग में भेज दिया? अरे, साथ रहके पवित्र रहीं उस पवित्रता का गायन है कि अकेले रह करके पवित्र रहीं उनकी पवित्रता का गायन है? कोई तो ऐसे भी होंगे जो 16 कला सम्पूर्ण देवता बनेंगे नम्बरवार। ये तो निश्चित है। जहाँ पवित्रता वाली बात आ जाती है उसमें लड़ाई लड़ने के लिए सबसे पहले पुरुष वर्ग ही खड़ा होता है। यज्ञ के आदि में भी जो पहले-2 पुरुष चले थे, वे सब विरोधी हो गए। बड़े-2 घरानों के बाबा ने मुरली में बताये हुए हैं। ऐसे ही एडवान्स पार्टी की जब शुरूआत हुई, तो जो बड़े-2, अच्छे-2 दिल्ली के अंदर महारथी पुरुषवर्ग थे, वो सब धराशायी हो गएँ, सब विरोधी हो गए। थोड़ी-सी माताएँ जा करके बचीं वे सब बांधेली हो गई। जैसे सिंध हैद्राबाद में बांधेली हो गई थीं। जो आदि में हुआ सो अंत में एडवांस में भी हुआ।

सिंगल उपासना दिखाई गई है। उसमें विशेषता है कि जो सिंगल उपासना करने वाले स्वर्ग की जिम्मेवारी का ताज धारण नहीं कर सकते; क्योंकि जो रावण होगा वो सीता को अकेला करेगा। इसका मतलब उसकी नीयत में तो खोट है ना? नीयत में खोट होने के कारण वह वेश्यालय बनाना चाहता है। वह पवित्र स्वर्ग की स्थापना नहीं करना चाहता है। वह ब्राह्मण परिवार में रह करके भी नर्क ही बनाएँगे। स्वर्ग नहीं बना सकते। इसलिए ऐसी आत्माओं को ज़िम्मेवारी का ताज धारण किया हुआ नहीं दिखाया गया है और जो आत्माएँ स्वर्ग की ज़िम्मेवारी का ताज धारण नहीं करती वे फिर द्वापर और कलियुग में भी आकर ताजधारी राजाएँ नहीं बन सकतीं। उन्होंने संगमयुग में भी पवित्रता का ताज धारण करने के नियमों का उल्लंघन किया था और दूसरों से भी कराया था। स्वर्ग की स्थापना वही कर सकेंगे, जो देवी-देवताओं को मानने वालें हैं, प्रवृत्ति को मानने वालें हैं। इसलिए बाबा ने उन्हें मुरली में सीढ़ी के चित्र में चित्रित दैत्य कहा है- "कनिष्ठ हैं दैत्य। कनिष्ठ मनुष्य बैठ उत्तम मनुष्यों की महिमा गाते हैं। मंदिर बनाकर ताज वालों को बिगर ताज वाले नमन करते हैं। सीढ़ी में शायद कुछ ऐसा है चित्र।"(मु.7.3.74 पृ.2 आदि)

तात्पर्य यह है कि जो युगल देवताओं की उपासना करने वाले हैं, उनको ताज दिखाया गया है। वो प्रवृत्ति मार्ग के पोषक हैं। इसलिए पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के घर-गृहस्थ में रहने वाले हैं, वो ही स्वर्ग की स्थापना कर सकते हैं। निवृत्ति मार्ग वाले घर-घाट छोड़ने वाले स्वर्ग की स्थापना नहीं कर सकते।

(11) **कम कला वाले देवताओं की पूजा-** प्रवृत्तिमार्ग की उपासना में भी अन्तर है। सीढ़ी में ल.ना. और कृष्ण वगैरह ये तो फिर भी 16 कला सम्पूर्ण देवता थे; लेकिन बाद में ऐसे देवताओं की उपासना होने लगी, जो कम कलाओं वाले थे, फेलियर्स थे। 14 कला वा कम कला वालों की उपासना भी दिखाई गई है। इन्होंने समझ लिया कि ये राम-सीता दिखाए गए हैं। ये अकेले राम-सीता की ही बात नहीं है, सतयुग में जितने भी बाद वाले नारायण हैं दूसरी गद्दी से लेकर के लास्ट गद्दी तक, वो सारे ही कम कलाओं वाले हैं, सब फेलियर हैं, सब चन्द्रवंशी हैं। ऐसे कम कलाओं वाले जो नारायण बनने वाली आत्माएँ हैं उनको भी सेवाकेंद्र रूपी मंदिरों में सरेंडर कराके बैठा दिया गया और उनकी ऐसे पूजा हो रही है जैसे भगवान-भगवती। भक्तों के लिए उनकी मनमत भगवान की श्रीमत है और उनके महावाक्य भगवान के महावाक्य हैं। मुरली की बात नहीं मानेंगे; लेकिन उन भगवान-भगवती की बात ज़रूर मानी जाएगी। ऐसे राम-सीता की उपासना करने वाले भी यहाँ बैठे हुए हैं। वे सब कम कलाओं वाले जो फेलिअर चन्द्रवंशी नारायण हैं, वे सीढ़ी में दिखाए गए हैं; लेकिन ये कम से कम प्रवृत्ति मार्ग की तो उपासना है। चलो, कम कलाओं वालों की है। इसलिए उनको भी ज़िम्मेवारी का ताज दिखाया गया है।

(12) **जानवरों की पूजा**- द्वापर का अंत होते-2/द्वापरयुगी शूटिंग का अंत होते-2 जानवरों की दुनियाँ की शुरूआत होती है। कलह-क्लेश वाली दुनियाँ। जानवरों का काम क्या होता है ? लड़ाई-झगड़ा करना। तो कलियुग की शुरूआत होते ही सिंगल देवताओं तक की तो गनिमत थी, राम सीता कम कलाओं वाले पूजनीय देवता तो हैं ही; परन्तु आगे जब कलियुग की शुरूआत हुई तो कलियुग की शूटिंग

होते-होते जानवर जैसे स्वभाव-संस्कार वाले जो मनुष्य यज्ञ के अन्दर हैं, जानवर जैसे स्वभाव वाले आततायी और हिंसक सिंगल देवताओं की पूजा होने लगी। मन्दिरों में, आश्रमों में स्थान बनाकर भगवान की तरह उनकी भी पूजा करते हैं और उनकी ही श्रीमत् को लोग फॉलो करने लग पड़ते हैं।

वास्तव में हुनमान, गणेश का पार्ट बजाने वाली राम-कृष्ण की ही आत्माएँ हैं। महावीर जिसे कहते हैं, माना वीर बाबा शंकर का पार्ट बजाने वाली आत्मा और गणेश का पार्ट बजाने वाली कृष्ण की आत्मा। वास्तव में वो महावीर हनुमान, गणेशजी का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ तो वो हैं। यहाँ सीढ़ी में जो बैठे हैं वो तो डुप्लीकेट बैठे हैं।

<u>हनुमान</u> :-जैसे 'हनुमान जी' दिखाए गये हैं। पूँछड़ी वाला हनुमान। हनुमान का काम क्या है? हनुमान का काम है रावण की लंका में पूँछ से आग लगाना उनकी जानवरियत की निशानी दिखाई जाती है। पूँछ कहाँ दिखाई जाती है? कमर में। कमर में दिखाई गई है क्योंकि कामेन्द्रिय कमर में है। काम वासना से आविर्भूत ये नं.वार आत्माएँ जो हैं, इनकी पूँछ बहुत लम्बी है। अर्थात् देहअभिमान का दुम्ब सबसे बड़ा दिखाया गया। ऐसे-2 जो हैं यज्ञ के अंदर जिन्होंने अपनी काम विकार की पूछ से सेंटर के सेंटर उखाड़ दिए । ऐसों को भी भक्तिमार्ग में सरेंडर कराके मंदिरों में देवता बना के बैठाय दिया गया और वो भगवान बन करके पूजा ले रहे हैं। बड़े-2 जो हेड्स हैं देहधारी धर्मगुरु वो अच्छी तरह से जानते हैं कि हनुमान के क्या-2 कारनामे हैं? कैसे-2 इन्होंने पूँछड़ी से आग लगाई है; लेकिन फिर भी इनको भगवान बना करके सरेंडर कराए के बैठाया गया। आज इनकी बात को ऐसे ही माना जा रहा है, अर्थात् उनकी पूजा रोटी-बेटी से ऐसे ही होती है जैसे किसी दामाद या बहनोई की होनी चाहिए। भगवान बन करके बैठ गए; लेकिन निवृत्तिमार्ग के सन्यासियों जैसे सिंगल भगवान हैं।

<u>गणेश</u> :-आगे दिखाया गया है- गणेश जी। इनकी काम विकार की निशानी पूँछ तो इतनी बुलन्द नहीं दिखाई गई है; लेकिन ऐसे भी नहीं कि इनकी पूँछ होती नहीं। पूँछ तो होती है थोड़ी-बहुत; लेकिन इनकी सूँड़ बहुत लंबी चौड़ी दिखाई गई है माना देहअभिमान की निशानी मुख में दिखाई गई है। इनके मुख में इतना देहअभिमान भरा हुआ होता है कि ये अपने विरोध में किसी की कोई बात सहन नहीं कर सकते। बात-बात में अपनी ही नाक ऊँची और लम्बी रखेंगे। इनका शरीर हाथी जैसे महारथी की तरह लम्बा-चौड़ा दिखाया जाता है। शरीर को बड़ा दिखाने का मतलब देहअभिमान बहुत है। हाथी की आँखों में जितना मद भरा रहता है इतना किसी दूसरे जानवर की आँखों में मद नहीं दिखाया जाता। इनकी आँखें बड़ी चंचल हैं। हनुमान जी, जो मार पूँछड़ी से नहीं मार पाते वो मार ये अपनी दृष्टि और वृत्ति से मारते हैं। और वो मार ज़्यादा ही घातक होती है। कान बहुत बड़े-बड़े हैं यानी ज्ञान बहुत सुनते और सुनाते हैं। उनमें ज्ञान सुनने, सुनाने का माद्दा बहुत है। माथा भी चौड़ा है मतलब अक्ल भी तीखी है; लेकिन देह अभिमान से बाज़ नहीं आ सकते। क्लास में कोई बातें होंगी तो कोई ना कोई बात की ऐसी सुर्रय्या छोड़ेंगे जिससे वायुमंडल दूषित और विकारी बन जाए। मुख से ज़रूर ऐसे वचन बोलेंगे या कोई ना कोई ऐसी आँख ज़रूर लड़ाएँगे जिससे वायुमंडल खराब हो जाए। दूसरे की वृत्ति ख़राब हो जाए। इस तरह की जो देह अभिमानी सूँड़ वाली आत्माएँ हैं, जिनके मुख में देहअभिमान है; परन्तु कमर में इतनी निशानी नहीं दिखाई पड़ती, जितना मुख में दिखाई पड़ती है। बाबा ने मुरली में कहा है कि कर्मेन्द्रियों से विकर्म नहीं होना चाहिए। आँख और मुख में जो इन्द्रियाँ हैं वह ज्ञानेन्द्रियाँ हैं; इसलिए वायब्रेशन भले खर्राब हो; लेकिन उन आत्माओं का इतना विकर्म नहीं बनता। दूसरी आत्माओं को तो नुक़सान होता है, देहाभिमान की उस दृष्टि से, उस वृत्ति से। उस करप्शन के अंदर जो दूसरी कमजोर आत्माएँ हैं, वह अवश्य आ जाती हैं; लेकिन उनका अपना बिगाड़ नहीं होता; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोल दिया है- कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। ज्ञानेन्द्रियों से नहीं कहा। कर्मेन्द्रियों से विकर्म होता है उसका पाप कर्म बनता है। लेकिन ये बात शिवबाबा पहले बोलते थे। अब वो बात लागू नहीं होती। अब अगर वायब्रेशन से भी श्रीमत की बरखिलाफी होती है और दृष्टि से भी अगर चंचलता बढ़ती है तो अभी दंड ज़्यादा है; क्योंकि अभी मंसा सेवा का टाइम चल रहा है। पहले बेसिक पढाई में मंसा सेवा का टाइम नहीं था सिर्फ वाचा और कर्मणा की भागदौड स्थूल चित्रों की प्रदर्शनी-प्रोजेक्टर या मेले

मलाखडों आदि की ही सेवा थी। तो ऐसे जो गणेशजी महाराज हैं उनको यहाँ पवित्रता का ताज दिखाया गया है; क्योंकि स्थूल कर्मेन्द्रियों से ये पवित्र रहे; लेकिन हैं यह भी सिंगल। यज्ञ के अंदर जो बड़े-2 मुखिया हैं। शासक, यज्ञ के अंदर शासन करने वाले, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि इनकी दृष्टि, वृत्ति ठीक नहीं है। उनके मुख से भरी सभा में ऐसे वाक्य उच्चारण हो जाते हैं, जिनसे वायब्रेशन ख़राब हो जाए; लेकिन फिर भी उनको मंदिरों में निमित्त बना करके ऐसे बैठा दिया गया है सरेंडर कराके, जैसे भगवान बैठाए गए। ऐसे जानवरों की पूजा करने वाले जो बैठे हैं, वे भी सिंगल संन्यासी ही दिखाए गए हैं और उनको भी ताज नहीं दिखाया गया। उन गणेश जी को फिर भी बाल दिखाए हैं यह तो पूरे ही घुटमुंडे संन्यासी बैठे हुए हैं। इनके तो माथे के बाल भी उड़ गए। ताज तो दूर की बात। इनका तो माया माथा ही मूँड़ लेती है। माया ने बुद्धि रूपी माथा मूँड़ा हुआ है तब तो ऐसे जानवरों की पूजा करते हैं। जानवरों की पूजा करने का मतलब क्या? अपनी भारतीय परम्परा में मान्य किसको माना जाता है? जिसको अपनी बहन-बेटी देते हैं, उनको मान्य मानते हैं। जो मान्य पक्ष होता है उसकी हम पूजा करते हैं। मान्य मानते हैं और उससे उसी तरीके से आचरण करते हैं, सम्मान देते हैं। यहाँ यह जानवरों की पूजा करते हैं। इसका मतलब यह अपनी बहनें और बेटियाँ ऐसों की सुपुर्दगी में छोड़ देते हैं तो पूजा करना हुआ न, माथा टेकना हुआ न। तो ऐसों को जो माथा टेकने वाले हैं वे क्या स्वर्ग स्थापन करेंगे! यह तो स्वर्ग को और ही उखाड़ेंगे। इस तरीके से भक्तिमार्ग में ये दिखाया गया कि जानवरों की भी पूजा शुरू हो जाती है। अरे, गणेशजी तो शास्त्र लिखते थे। शास्त्र लिखने का काम करते थे। अच्छा, पूँछड़ी वाले हनुमान जो है वह पवित्रता की डींग हाँकते थे। मैं ब्रह्मचारी हूँ, बहुत बड़ा ब्रह्मचारी हूँ। जैसे कोई आदमी हो, हो तो अपवित्र लेकिन प्योरिटि अख़बार निकालने लग पड़े। तो दुनियाँ में पवित्रता की सबसे डींग मारने वाला तो वो ही हो गया। तो ये गणेश, हनुमान की पूजा की शूटिंग हो गई। बाबा ने मुरली में कहा है-"दैवी गुणों वाले मनुष्य थे। अभी आसुरी गुणों वाले (असुर या जानवर) बनते हैं। और कोई फर्क नहीं है। पूँछ वाला वा सूँढ़ वाला मनुष्य होता नहीं है। देवताओं की सिर्फ यह (जानवरियत की) निशानियाँ हैं।" (मु.15.12.68 पृ.2 अंत) श्रीमत्भगवत् गीता में भी आया है-

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ 7/23

तेषां (उन) अल्पमेधसां (अल्पबुद्धि वाले, बेसमझ लोगों का) तु (तो) तत् (वह) फलं (फल) अन्तवत् (विनाशी) भवति (होता है); {क्योंकि} देवयज: ({अन्यान्य ब्राह्मण}-देवों के प्रति त्याग करने वाले) देवान् {क्म कलाओं वाले कनवर्टेड} (देवताओं को) यान्ति (पाते हैं) और मद्भक्ता: (मुझे भजने वाले) मां (मेरे 16 कला सम्पूर्ण पद को) इर्थात् अर्धनारीश्वर शिव के भगवान-भगवती स्वरूप को अपि (ही) यान्ति (पाते हैं)।

ये गणेश हनुमान की पूजा हो गई।

(13) **मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा**- आगे ये दिखाया गया कि ये देहधारी धर्मगुरु इससे भी संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने फिर क्या किया, मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा होने लगी। मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा का मतलब शिवोऽहम्। हम ही सबकुछ हैं। हम ही शिव हैं। हम जो डायरैक्शन दें उस पर चलो और ये व्यभिचारी पूजा बनाने का मक़सद यही था कि अनेकों की पूजा होगी तो बाद में हमारी भी पूजा भगवान समझ करके होने लग पड़ेगी। यह गुरुजी महाराज बैठे हुए हैं। ऊपर से लेकर के नीचे तक, एड़ी से लेकर चोटी तक रंगे हुए हैं। ऊपर से कम रंगे हुए दिखाये हैं, नीचे से ज्यादा रंगे हुए हैं। इनका जो रंगीन चोला है, इनके अंदर इस बात को साबित करता है कि ये किसी भी व्यक्ति को ज्ञान की ऐसी रंगीली बातें सुनाते हैं कि कोई भी सीधा-साधा व्यक्ति झट से सफेद कपड़े पहनने वाला ब्रह्माकुमार बन करके इनके सामने प्रस्तुत हो जाए। इतने ज्ञान सुनाने में ये पटु, चालाक हैं। यहाँ सीढ़ी में परम भक्त ब्रह्माकुमार भी कैसा दिखाया? सिर्फ़ सफेद

पोष नहीं है, ब्रह्माकुमार है ऐसा जो गुरुजी के सामने हाथ जोड़कर के और माथा झुकाकर के बैठा हुआ है, नम्रचित्त हो करके। भगवान शिव की वाणी के प्रति उसकी नम्रता नहीं होगी, क्लास टीचर (अर्थात्) जो बहन निमित्त बनाई होगी उसके प्रति उसकी उतनी नम्रता नहीं होगी; गुरुजी जिधर चलाएँगे उस तरफ़ चलने की उसकी नम्रता होगी। उनके गुरु जी जब तक ज्ञान में चलेंगे तब तक वह भी ज्ञान में चलेगा और जिस दिन गुरु का कंटा कट जाएगा, ज्ञान में से टूट जावेंगे उस दिन वह चेलाजी भी ज्ञान में से टूट जाएगा। ऐसे ऐसे गुरु-चेले हर आश्रम में देखने को मिल सकते हैं। ऐसे गुरु जी को अपना भाषण करने के लिए कोई संदली नहीं मिलती है। है तो वह जिज्ञासु की ही कैटागिरी, नीचे ही बैठते हैं, विद्यार्थी हैं; लेकिन वह हैं अच्छे खासे गुरु, जो ऐसे ब्रह्माकुमार बनाने में बड़े पटु हैं। सफेद पोष ब्रह्माकुमार-कुमारी फट बना देंगे। खुद चाहे रंगीन कपड़े पहनते हों; लेकिन बीके ऐसा तैयार करेंगे जो ऊपर से नीचे तक एकदम टाइट सफेद पोष, बढ़िया नम्र बी.के. होगा। हर सेंटर्स में ऐसे जिज्ञासु और ऐसे गुरु जरूर देखने को मिलेंगे। बाबा की बात नहीं मानेंगे। मुरली सुनने से उनको प्यार नहीं होगा। टीचर की बातों से उनको कोई प्यार नहीं होगा। मम्मा-बाबा से उनको कोई प्यार नहीं होगा। जो गुरु उनको ज्ञान में खींच करके लाया है बस, वह गुरु ही उनके लिए भगवान हो जाता है। साधारण से साधारण ज्ञानरंग से रंगा हुआ रंगीला मनुष्यगुरु, जिसे कोई गद्दी कभी भी न मिली हो वह यदि किसी व्यक्ति को सफेद पोष ब्रह्माकुमार बनाने में सफल हो जाता है तो वह भी भगवान की तरह अपनी पूजा करवाने में नहीं चूकता। यहाँ तक कि उस तथाकथित भगवान का वह पुजारी निमित्त बनी टीचर की ही नहीं, बल्कि अपने उस रंगीले गुरु की भेंट में सद्गुरु शिवबाबा की मुरली रूपी महावाक्यों की भी खुलेआम अवहेलना कर जाता है। सीढ़ी के पुराने चित्र में चित्रित इस तरह की 'व्यभिचारी भक्ति' की पराकाष्ठा वाला गुरु-चेले का चोली-दामन का साथ हर सेवाकेंद्रों में देखने को मिलेगा। ऐसी मनुष्य मनुष्य की पूजा इन देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा रावण सम्प्रदाय के के द्वारा चल पड़ती है।

(14**) पांच तत्वों की पूजा**- गुरु पूजा, मनुष्य-मनुष्य की पूजा जब ज्यादा बढ़ती है तो पाँच तत्वों की पूजा का उग्र रूप धारण करती है। कलियुग मध्यान्त की शूटिंग में अग्नि, जल, जड़ वृक्ष, मिट्टी आदि जड़ तत्वों की पूजा दिखाई गई है। पाँच जड़ तत्वों को भी भगवान समझ करके उनकी पूजा होने लगती है। इस तरह पाँच तत्वों की ये पूजा पाँच भूतों की पूजा के समान है। 5 तत्वों के संघात प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ नमूना मनुष्य का शरीर है। इन 5 तत्वों से बने जड़ शरीर रूपी मूर्ति की पूजा को बाबा ने भूत पूजा कहा है। मुरली में भी बाबा ने कहा है-"पहले अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। (जड़) शरीरों की भी पूजा करते। इनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर पांच भूतों का बना है।" (मु.25.7.76 पृ.2 मध्य) •"तुम जानते हो जो हमको ऐसा बनाते हैं उनकी पूजा होगी। फिर हमारी भी पूजा होगी नम्बरवार। फिर गिरते-2 5 तत्वों की भी पूजा करने लग पड़ते हैं। शरीर 5 तत्वों का है ना। 5 तत्वों की पूजा करो या शरीर की करो बात एक ही हो जाती।" (मु.9.1.69 पृ.2 मध्य) गीता में भी आया है-

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसा: ।

प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जना: ॥ 17/4

सात्त्विका: (सत्वगुणी लोग) देवान् (देवताओं को), राजसा: (राजसी वृत्ति के लोग) यक्षरक्षांसि (यक्ष-राक्षसों को) {और} अन्ये (दूसरे) तामसा: (तामसी) जना: (लोग) प्रेतान् (प्रेतों) च (और) भूतगणान् ({देहधारी} भूत समुदाय को) यजन्ते (पूजते अथवा याद करते हैं)।

पाँच तत्वों के शरीर की पूजा मतलब किसी व्यक्ति विशेष की पूजा या किसी गुरु विशेष की सेवा करना- ये है देह की पूजा। किसी व्यक्ति विशेष की विशेष सेवा करना, खास खुट्टेबरदारी करना, सबको आत्मिक दृष्टि से न देखना। यह सिर्फ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ही बात नहीं, जिस-जिस संस्था ने इस दैहिक पूजा का रूप पकड़ा है उसका रिज़ल्ट हुआ- पाँच तत्वों के शरीर की पूजा। जब उसमें देहधारियों की पूजा होने लग पड़ती है, तब एकदम पतन होना शुरू होता है। खास करके पुरुष वर्ग जब अपनी देह की पूजा लेना शुरू कर

देते हैं तो पतन ज़रूर होता है। यज्ञ के अंदर हर सेवाकेंद्र में ये देह की पूजा खास करके कन्याएँ-माताएँ विशेष करने लग पड़ती हैं। प्राय: करके गद्दीनशीन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा धार्मिक सेवाकेंद्रों रूपी मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारों में भोली-भाली माताओं और घर-गृहस्थ छुड़वाकर अधीन बनाई गई कन्याओं से यज्ञसेवा के नाम पर इस प्रकार की ज़ोर-ज़बरदस्ती वाली भूत (प्रेत)/व्यक्तिगत पूजा कराई जा रही है। यज्ञ की सामूहिक सेवा करना दूसरी बात है; परंतु किसी से व्यक्तिगत सेवा लेना या देना श्रीमत के विपरीत है। चाहे वह कपड़ा धोने, बर्तन माँजने, खाना बनाने या तेल मालिश करने आदि किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सेवा क्यों न हो। देह की पूजा का मतलब है, जैसे-क्लास हो रहा है, क्लास होने के बाद सबको टोली बाँटी गई। चम्मच, कटोरीयाँ, ग्लास वगैरह दिए गए। फिर उन्होंने डायरैक्शन दिया कि भाई उनको साफ़ करो तो कोई भगतजी महाराज ऐसे होते हैं, कटोरी वगैरह सब एक जगह पर इकट्ठी कर दीं, ले जाके रख दी और रफूचक्कर हो गए। हमको माँजने पड़ेंगे। भाग गए। कोई ऐसे होते हैं कि अपने जो गुरुजी महाराज होते हैं, दीदी-दादा वगैरह उनके तो साफ़ कर दिए और रोज़ ही साफ़ करते रहते हैं; लेकिन बाकी दूसरों के साफ़ करने से अलग हो गए। तो ये हुई देह पूजा। भावना ये रहनी चाहिए कि ये तो बाबा के बच्चे हैं, बाबा के बच्चों की हम सेवा कर रहे हैं माना ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं। अगर किसी एक व्यक्ति विशेष की पूजा करते हैं, जैसे सेंटर्स पर अकसर देखा जाता है, बड़े-2 गुरु हैं, आचार्य हैं, पीठाधीश-मठाधीश बैठे हुए हैं, उनके शरीर की तो खूब पूजा होगी, उनके कपड़े भी धोए जाते हैं, बर्तन भी धोए जाते हैं, उनके लिए खाना भी बनाया जाता है और खास करके माताएँ ऐसा काम करती हैं। जो असिस्टेंट बहनें, वो भी करती हैं। वो तो मजबूरी में कर रही हैं। हाँ, लेकिन अपने पड़ोस में अगर कोई ब्रह्माकुमार भूखों मर रहा हो तो भी उसको देखने भी नहीं जाएँगे। टोली बाँटने के बाद जो बर्तन इकट्ठे हुए उन सब बर्तनों को अगर कोई जिज्ञासु धोने के लिए बैठ जाए तो वह हुई यज्ञ की सेवा; लेकिन कोई एक खास भाई या बहन के बर्तन साफ़ कर दें और बाकी दूसरों के साफ़ करने से इन्कार कर दें तो ये पाँच तत्वों की खास पूजा हुई। कोई पाँच तत्वधारी विशेष मनुष्य हैं जिनके पाँच तत्वों के शरीर की पूजा हो गई। तो ब्राह्मणों की दुनियाँ में यहाँ दिखाया है भूत पूजा होने लग पड़ती है। भूत पूजा के संबंध में बाबा ने मुरली में कई महावाक्य बोले हैं-“कई हट्टी-कट्टी ब्राह्मणियाँ कपड़े भी धुलवाती हैं। बर्तन भी साफ़ करवाती हैं। वास्तव में उनको सभी कुछ अपने हाथ से करना है। तबीयत की बात अलग है। यहाँ सभी सुख ले लेंगे तो वहाँ (अब आने वाले संगमयुगी 21वें हीरे तुल्य सर्वश्रेष्ठ जन्म में) सुख गँवा देंगे। यहाँ ही नवाब बन जाते हैं।”(मु.26.10.76 पृ.3 अंत) गीता में भी आया है-

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।

कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्॥ 18/6

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) तु (किंतु) एतानि (इन) कर्माणि {अलौकिक} (कर्मों को) अपि (भी) संगं सांसारिक (आसक्ति) च (और) फलानि (फलों को) त्यक्त्वा (त्याग कर) {ही} कर्तव्यानि (करना चाहिए), इति (ऐसा) मे (मेरा) निश्चितं
(निश्चत) उत्तमं मतम् (उत्तम मत है)। य्दि यहीं फल भोग लिया, तो परलोक में क्या प्राप्ति होगी! •सर्विस से यहाँ सुख लेंगे तो वहाँ का सुख कम हो जावेगा। (मु.16.1.67 पृ.3 आदि)

“कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं। बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देहअभिमानी समझते हैं। बाप कितना निरअहंकारी है। बच्चों को बड़ा म्यूजियम मिल जाता है तो
बस हुकुम चलाने शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं।”(मु.12.11.68 पृ.2 अंत) “ऐसी भी बहुत ब्रह्माकुमारियाँ हैं जो भक्तिमार्ग बैठ सिखलाती हैं। जैसे साधु-संत करते हैं। कृष्ण की मूर्ति रख उनको माथा टेका। ब्रह्माकुमारियों के आगे भी माथा टेका। कुछ न कुछ आमदनी मिली। बैठ कर खाते। कितनी सत्यानाश कर रही हैं। चढ़ने के बदली और ही गिरते हैं।” (मु.11.4.72 पृ.2 अंत)

(15) **<u>द्रौपदी की पुकार</u>**:- ब्रह्माकुमारी आश्रम में श्रीमत के बरखिलाफ ऐसे बहुत से पुरुष सरेण्डर कर दिए गए हैं। जबकि बाबा ने किसी भी मुरली में ये नहीं कहा कि पुरुषों को गौशाला (सैण्टर) में रख दिया जाए। अरे! कृष्ण भगवान है तो कृष्ण गौपाल बनेगा कि बैलों को पालेगा? पुरुष जो हैं वे शक्तियों की सुरक्षा करें, धन कमाकर उनको दें, न कि और वहाँ बैठकर खाएँ। ऐसी भूत पूजा का नमूना कोई सरेंडर्ड ब्रह्माकुमार के प्रति होने लग पड़ता है, पुरुषवर्ग के प्रति माताएँ और कन्याएँ ऐसी 5 तत्वों की सेवा, उपासना करने लग पड़ती हैं। खास करके मालिश करना, कपड़े धोना, बर्तन मलना वगैरह-2। तब उस पूजा का जो घिनौना रूप है वह सामने ज़रूर आ जाता है। पुरुष जितने भी हैं सब दुर्योधन, दु:शासन। कोई भगवान नहीं हो सकता। क्योंकि भगवान भी प्रजापिता में प्रवेश करता है। वह प्रजापिता भी दुर्योधन, दु:शासन की लिस्ट में हो गया तो और कौन बचेगा? जब ऐसा घिनौना रूप सामने आ जाता है- दुर्योधन, दु:शासन द्रौपदी की लाज खींच रहे हैं और नीचे साफ़-2 शब्दों में लिखा हुआ है 'हाय! शिवबाबा बचाओ।' बाबा ने मुरली में कहा है- "बाप कहते हैं इस समय हरेक दुर्योधन और द्रौपदियाँ हैं। दुर्योधन, द्रौपदी को नंगन करते हैं। .... द्रौपदियाँ तो वास्तव में सभी ठहरीं। कुमारी अथवा माता सभी द्रौपदियाँ हैं। कीचक तो ढेर हैं जो पिछाड़ी पड़ते हैं। ...... कीचक आदि की अभी की बात है।"(मु.7.5.73 पृ.2 मध्य) • "द्रौपदी पुकारती है कि बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। हम पवित्र बनकर कृष्णपुरी में जाने चाहती हैं। कन्याएँ भी पुकारती हैं- माँ-बाप हमको तंग करते हैं, मारते हैं कि विकारी बनना ही होगा।"(मु.1.5.72 पृ.2 मध्य) "द्रौपदी कोई एक थोड़े ही हैं। हजारों करोड़ों नंगन होती रहती हैं। सभी नहीं पुकारते हैं। जिनको बाप की डायरैक्शन मिलती है पावन बनने लिये उनको पतित होने तंग करते हैं तो पुकारती हैं।" (मु.1.3.69 पृ.1आदि) ये 'हाय! शिवबाबा बचाओ' की गुहार ब्रह्माकुमारी लगाएगी कि कोई दुनियाँवी औरत लगाएगी? दुनियाँवी औरत तो जानती ही नहीं कि शिवबाबा क्या होता है। इस चित्र में ये ऊपर से लेकर नीचे तक रावण सम्प्रदाय की भक्तिमार्ग की सारी सारी कथा-कहानी क्लीयर कर दी। यहाँ जो चित्र दुर्योधन, दु:शासन के रूप में दिखाया गया है, वह भी एड़ी से लेकर चोटी तक सफेदपोष ब्रह्माकुमार का दिखाया गया। ये जरूर कोई परमप्रसिद्ध ब्रह्माकुमार ही दिखाया जाएगा। टोपी, अचकन, चुड़ीदार, पाजामा। ज्ञानामृत के जो पुराने-2 चित्र हैं, उनमें भी वो चित्र देखे जा सकते हैं। तो नम्बरवार ब्रह्माकुमार हैं। चित्र बनाया तो बुद्धिमानों के बुद्धि परमपिता परमात्मा ने बुद्धियोग से बनवाया। बाद में क्यों बनाया? साक्षात्कार से नहीं, बुद्धियोग से बनवाया; लेकिन बनाया गया तो रावण राज्य की शूटिंग पूरी होने से पहले ही बनाया गया ना! परमात्मा ने बनवाया ना। जैसे परमात्मा ने शास्त्र पहले से ही बनवाय के रखे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार ऐसे कहो। ड्रामा में ये बात नूंधी हुई है।

ब्रह्माकुमार दिखाया गया व्हाइट ड्रेस, आजकल सीढ़ी के चित्र में ये ड्रेस नहीं दिखाते हैं। उसने अपनी ड्रेस ही चेंज कर ली है। इस ज्ञान यज्ञ में कोई भी असुर का चेहरा छिपा नहीं रह सकता। ये ब्राह्मण परिवार एक शीशे का महल बन जाएगा। मुरली में बोला है- इसमें कोई भी असुर अपने चेहरे को छिपाय नहीं सकेगा।

यहाँ जो चित्र दिखाया गया है, उसमें दिखाया गया है कि दु:शासन जी महाराज हाथ में कटारी लिए हुए हैं। इसके बारे में मु. में कहा है- "तुम्हारे में भी (नं.वार) कोई तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि रह जाते हैं। तुम जानते हो कितने कपूत बच्चे हैं। ब्रह्माकुमार कहलाने वाले भी कपूत हैं। उनसे तो साधु लोग अच्छे हैं। पवित्र रहते हैं। समझू हैं। यहाँ तो ऐसे-ऐसे हैं जो पतित दुनियाँ वालों से भी बदतर हैं।"(मु.1.10.73 पृ.3 अंत) "कन्याएँ सर्विस पर जाती हैं तो कीचक (ब्रह्माकुमारी के) पिछाड़ी में पड़ते हैं। फिर लिखा है भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। कीचक माना एकदम डर्टी ब्रूट्स, जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी की बात है। इस समय सभी द्रौपदियाँ, कीचक, दुर्योधन हैं। आसुरी सम्प्रदाय हैं। इसकी बहुत सम्भाल करते रहना है। अगर बाप के पास आये फिर कीचक बने तो पिता (पता) नहीं धर्मराज बन क्या हाल करूँगा!" (मु.7.5.73 पृ.2 मध्यांत) ये कोई स्थूल कटारी की बात नहीं है। बाबा तो कहते ही हैं काम कटारी की शुरूआत आँखों से होती है। आँख से ही कटारी पहले चलाई जाती है। तो यज्ञ के अंदर देहधारी धर्मगरुओं ने जो बाबा का कभी भी डायरैक्शन मुरली में नहीं रहा होगा कि- कच्ची, कम उम्र की कन्याएँ, कोमल कलियाँ संदली पर बैठकर जाति-2 के पुरुषों को दृष्टि का दान दें- इसको योग कहा

जाता है। वही धंधा देहधारी धर्मगुरुओं ने व्यभिचार का पोषण करने के लिए शुरू कर दिया। जो भारत वर्ष की कन्याएँ, माताएँ, सीताएँ, सावित्री इस बात के लिए प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने परपुरुष रावण की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। भले उसके राज्य में रही, वाटिका में रही; लेकिन फिर भी आँख उठाकर भी नहीं देखा। उसी भारतवर्ष में इन देहधारी धर्मगुरुओं ने ये क्या योग के नाम पर भोग का प्रबंध कर रखा है। इन देहधारी धर्मगुरुओं को यह पता नहीं है कि हम तो देहधारी धर्मगुरु हैं ही; लेकिन हमारा भी कोई बाप इस सृष्टि पर आया हुआ है। इसलिए बाबा मुरली में ठोकठोक के बोलते हैं- बच्चे तुम्हारा बाप आया है। तुम तो जैसे हो तैसे हो ही हो; लेकिन तुम ऐसे बातों से सुधरने वाले नहीं हो। बाबा ने मुरली में तो नहीं कहा कि एक दूसरे को दृष्टि देना यही योग है। शिवबाबा ब्रह्मा के तन में आ करके दृष्टि देते थे। दृष्टि लेने वाले लेते थे। तो परमात्मा की दृष्टि से तो सृष्टि सुधर सकती है। परमात्मा की जो इन्द्रियाँ हैं उन इन्द्रियों से जब मनुष्यों की इन्द्रियों का मेल होगा तो इन्द्रियों में सुधार आ सकता है; लेकिन मनुष्यों की दृष्टि पतित है या पावन? मनुष्य की दृष्टि तो खुद ही पतित है। दृष्टि सुधर जाए तो और क्या चाहिए! फिर तो कुछ चाहिए नहीं। तो जिस मनुष्य की दृष्टि पतित है वह मनुष्य दृष्टि दे करके कैसे पावन बनाएगा!

ब्रह्मा भी देहधारी धर्मगुरु है। कोई भगवान नहीं। उसकी एक्ट का शिवबाबा (जिम्मेवार है)....मात्र वो नहीं है। शिवबाबा क्यों एक-2 को बैठ करके चेक करें? जैसा करोगे वैसा पाओगे और ब्रह्मा को तो वैलिड है; क्योंकि उनके तन में शिवबाबा आता था। पुरुषों को बैठने को तो वैलिड है ही नहीं। यहाँ तो कन्याएँ, माताओं को निमित्त बनाया जाता है। समझने से बहन नहीं हो जाती। समझने से बहन के अंदर शिवबाबा प्रवेश नहीं कर जाता। लिख करके दो बहन है; लेकिन उसमें शिवबाबा प्रवेश नहीं करेगा। गीता पाठशालाओं को तो वैलिड कर दिया है। जो आपस में पति-पत्नि हों दोनों ज्ञान में चल रहे हैं, वो गीतापाठशाला चला सकते हैं। उनमें भी माता क्लास को कंट्रोल करे। वही अच्छी बात है। भाई नहीं। अगर भाई बैठता भी है तो युगल को साथ ले करके क्लास में बैठे। कहने का मतलब ये हुआ, ये राँग हुआ, मुरली के बरखिलाफ़ हुआ। मुरली में तो बाबा ने कहा है- बाप ब्रह्मा में बैठ करके दृष्टि देते हैं। सकाश देते हैं। तुम बच्चे तो ऐसा नहीं करेंगे। “बाबा कहते हैं मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे।”(मु.12.4.68 पृ.4 मध्य) यानी बच्चे ऐसा नहीं कर सकते। ब्रह्मा कोई दृष्टि देने वाला नहीं है। ब्रह्मा के अंदर भी दृष्टि देने वाला कौन है? शिवबाबा। ब्रह्मा की सोल भी उस समय याद करने वाली है या दृष्टि देने वाली है? याद करने वाली है। तो इन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा बिल्कुल धर्म की जगह अधर्म फैलाए दिया जाता है। ये जो अधर्म फैलाया जाता है, उसका मूल कारण है कि इनकी बुद्धि विकारी बन पड़ी है। ये कंस के कुसावे में अच्छी तरह से आ जाते हैं। इनकी बुद्धि ष्ट हो जाती है। वरना यह बहुत श्रेष्ठ आत्माएँ हैं। अगर कंस इनको ना कोसे तो। पुरुष स्त्री को और स्त्री जाति-जाति के पुरुषों को दृष्टि का लेन-देन करे। अरे! आँख भी तो एक इन्द्रिय है। इस इन्द्रिय का अनेकों के साथ लेन-देन करना क्या ये व्यभिचार नहीं हो गया? और इन्द्रियाँ इतना धोखा नहीं देतीं, आँखें सबसे जास्ती धोखा देने वाली हैं। तो जो सबसे जास्ती धोखा देने वाला अंग है उसी का संग हम दूसरों के साथ करेंगे और वो भी कोमल कन्याओं का, तो रिजल्ट क्या होगा? व्यभिचार, ष्टाचार और ही ज़्यादा बढ़ेगा। उसे कोई रोक नहीं सकता। बजाय स्वर्ग स्थापन होने के और ही नर्क स्थापन हो जाएगा। यज्ञ के अन्दर वो ही नर्क स्थापन हो रहा है। सेवाकेन्द्रों में और ही झगड़े चल रहे हैं। झगड़े कब चलते हैं? जितना इन्द्रियों का व्यभिचार बढ़ता जाएगा उतने ही झगड़े भी बढ़ते जाएँगे।

जैसे सीढ़ी के चित्र में उस दुर्योधन, दु:शासन ने अपने बुद्धि रूपी पाँव से उस स्त्री के बुद्धि रूपी पाँव को दबोच रखा है मतलब हावी हो गया, कब्जे में कर लिया और हाथ में काम कटारी पकड़ ली, मतलब नैन कटारी से लगातार उसको मार रहा है। पुरुष वर्ग जो होता है उसका बुद्धिरूपी पाँव प्रखर होता है और कन्याओं का बुद्धिरूपी पाँव उतना प्रखर नहीं होता। उनकी बुद्धि कोमल होती है। सब इन्द्रियाँ कोमल होती हैं। तो कठोर इन्द्रियों और कठोर बुद्धिवाला पुरुष जब स्त्री के ऊपर हावी होता है तो स्त्री अधीन हो जाती है। तो यहाँ दिखाया गया है कि कैसे बुद्धि रूपी पाँव को पाँव से दबोच रखा है। यानी उसकी बुद्धि के ऊपर वो पुरुष हावी हो जाता है।और जो चीर खींच रहा

है वो चीर मटमैला हो गया है। ऐसे नहीं है कि ये ब्रह्माकुमारी नहीं है, इसको सफेद साड़ी क्यों नहीं दिखाई गई; लेकिन सफेद साड़ी मैली हो गई- इस बात को चित्रित करने के लिए चित्रकार ने यहाँ मटमैली साड़ी दिखाई है। उसके वस्त्र मैले दिखाए गए हैं, इसका मतलब क्या हुआ? ये जो मैले वस्त्र दिखाए गए हैं, है तो सफेद साड़ी ही; लेकिन उस देह रूपी वस्त्र को उस दु:शासन ने गंदा कर दिया है। इसलिए उस सफेद साड़ी को गंदा दिखाने के लिए, ऐसा मटमैला रंग कर दिया गया। उसका शरीर रूपी वस्त्र गंदा वैश्या का हो चुका।

यहाँ लिखा हुआ है- 'हाय शिवबाबा बचाओ।' यानी उनमें अर्थात् अबलाओं की जाति में इतनी शक्ति नहीं होती है जो पुरुष तन का मुकाबला करें। उसके अन्दर खुद ही संग के रंग से कमजोरी आ जाती है; इसलिए ये अन्दर से आवाज
निकल रही है- हाय! शिवबाबा, हम तो यहाँ पवित्र रहने के लिए अर्पण हुए थे और यहाँ तो हमारी पवित्रता पर ही घात होने लगा। तो अन्दर से आवाज निकलती है- हाय! शिवबाबा बचाओ, हमें तो ये वैश्या बना रहा है, हम तो अब
तुम्हारी शिव शक्ति नहीं रहे। तो अन्दर से ये जो आवाज़ निकलती है वो आवाज किसी ब्रह्माकुमारी की ही है, जो यहाँ दिखाई हुई है। कोई दुनियाँवी स्त्री जो है वो शिवबाबा शब्द का उच्चारण नहीं करेगी। यज्ञ के अन्दर जो ऐसी वृत्ति है उसका मूल कारण हुआ कि सेण्टर्स के अन्दर जो पुरुष सरेण्डर होकर घुसे हुए हैं, उनके द्वारा ये सारा घोटाला हो रहा है। अगर उन पुरुषों को सरेण्डर ना किया जाता तो ये घोटाला नहीं होता। बाबा ने तो कभी मुरलियों में ये ऑर्डर ही नहीं दिया है कि पुरुषों को सरेण्डर करने की जरूरत है। अरे, पुरुष तो दुनियाँ में जहाँ भी चाहे अपना कमाएँगे, खाएँगे, उनको सुरक्षा की क्या जरूरत है। कन्याओं-माताओं के ऊपर पवित्रता का दखल हो सकता है। उनको पवित्रता के लिए रक्षा की आवश्यकता पड़ सकती है, तो वे आकर यज्ञ में शरण ले सकती हैं। कितना विचित्र ड्रामा है। कन्याओं-माताओं की रक्षा के लिए रखे जाने वाले रक्षक (सींरीवी) ही तमोप्रधान कलियुगी शूटिंग में भक्षक बन जाते हैं। शायद इसलिए अ.बापदादा ने सावधानी दी थी कि "पांडवों को गार्ड बनाकर शक्तियों की रखवाली के लिए निमित्त बनाया हुआ है। पांडवों को पीछे रहकर शक्तियों को आगे करना है। गाइड नहीं बनना है। गार्ड बनना है। जब पांडव गाइड बनते हैं तो गड़बड़ होती है। इसलिए पांडव सेना को गार्ड बनना है।"(अ.वा.2.4.70 पृ.235 मध्य)

जब ऐसे पतन होने लग पड़ता है, तब बिल्कुल रावण राज्य का घिनौना रूप जो कि आँखों से देखने की चीज़ नहीं है वह सामने आता है। आगे चल करके ये दिन-प्रतिदिन दुनियाँ में गंद बढ़ता जावेगा। बाहर की दुनियाँ में ही नहीं,
ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी आगे चल करके गंद और ज़्यादा बढ़ेगा। तो बातें और क्लीयर हो जाएँगी।

(16) **<u>डूबी जा-डूबी जा</u>**- आगे सीढ़ी में यहाँ दिखाया गया है- देवी पूजा डूब जा-डूब जा। भक्तिमार्ग में देवियों की पूजा करते हैं, बहुत मान सम्मान देते हैं, गहने पहनाते हैं, मन्दिर बनाते हैं। मन्दिर बनाने में, गहने पहनाने में, पूजा करने में लाखों रुपया खर्च कर देते हैं। 8/9 दिन उनकी पूजा करके बाद में उनको सागर या नदियों में ले जाकर डुबो देते हैं। डूबती नहीं हैं तो पाँव से जबरदस्ती भी डुबो देते हैं। ये सब भक्तिमार्ग की परम्पराएँ कहाँ की हैं? संगमयुग में इन देहधारी धर्म गुरुओं की ही ये सारी करतूत है अथवा देहधारी धर्मगुरुओं के प्रभाव में आकर, प्रभावित होकर जो ये कर्म करते हैं उनकी करतूत है। बाबा ने यज्ञ-सेवा के लिए कन्याओं-माताओं को समर्पित कराया। वे कन्याएँ-माताएँ सेवाधारी हैं। वे कोई देवियाँ नहीं हैं। देवी-देवताएँ सतयुग में होंगे। इस कलियुग में कोई देवी-देवता नहीं होते, जैसे मुरली में बोला देवी की पूजा करने वाले हैं रावण सम्प्रदाय। बाबा ने मुरली में कहा है-"बाबा बहुत कड़े-2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतनी भुजाएँ क्यों देते हैं? जैसे रावण को भुजाएँ दी हैं वैसे देवियों को भी दी हैं। तुमको तो इतनी भुजाएँ हैं नहीं; परंतु रावण सम्प्रदाय है ना; इसलिए भुजाएँ भी दे दी हैं। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सजाकर पूजा आदि कर फिर कहते हैं डूब जा। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़कर भी डुबोते हैं। कितनी नॉनसेन्स बुद्धि, आसुरी बुद्धि है।" (मु.7.4.68 पृ.2 आदि) देवी की पूजा करने वाले शिवबाबा को इतना ध्यान नहीं देंगे, याद नहीं करेंगे, मुरली की बात

पर, बाबा के डायरैक्शन पर उतना अमल नहीं करेंगे। वही बात मुरली में रोज़ आती रहे बच्चे, सेंटर्स खोलो; म्युजियम खोलो तो ध्यान नहीं देंगे; लेकिन जिस दिन उनकी वो देवी जी डायरैक्शन देंगी-भाई जी, अपना कोई सेंटर खोलना चाहिए, तो फट से उस देवी जी के पुजारी देवी जी के लिए मन्दिर बनवाकर तैयार कर देंगे। शहर-शहर में ऐसे मन्दिर बन रहे हैं और जड़ सो चैतन्य देवी जी की उस मन्दिर में प्रैक्टिकल स्थापना कर दी जाती है। अच्छे-2 वस्त्र, अच्छा-2 पहनावा, साज-शृंगार, सोफासैट, डबल बैड, रंगीन टी.वी., फ्रीज़ आदि सब साज-सामान आश्रमों में इकट्ठा कर दिया जाता है। अपनी बीबी-बच्चों के लिए भले वो दूध, कपड़ा और मकान का इन्तजाम ना कर सकें, जिन्दगी भर रुलाते ही रहें; लेकिन देवियों की पूजा में सारा पैसा बरबाद कर देते हैं।

जब बाद में प्रैक्टिकल में बाप की प्रत्यक्षता होती है, बाप का असली रूप संसार में प्रत्यक्ष होता है, तो ऐसे देवी पूजा करने वाले जो रावण सम्प्रदाय हैं, उन्हें पश्चाताप होता है। उस पश्चाताप को पश्चाताप की दृष्टि से नहीं देखते। वे ये देखते हैं कि इन देवियों ने हमको नीचे गिराया है, ये देवियाँ नहीं राक्षसियाँ हैं, फिर वे उनको राक्षसियाँ नज़र आती हैं। जब ईश्वर के स्वरूप की उनको प्रत्यक्षता होती है तो आश्रमों में जाकर उन देवियों का अपमान करना शुरू कर देते हैं और इतना तक अपमान करते हैं कि आखिरीन उनको डुबो ही देते हैं। उनका मान-मर्तबा सारा ख़लास कर देते हैं। यह सब कहाँ की बातें हैं? हमारे यज्ञ के अन्दर की ही बातें हैं। अभी (सन् 76 से) कुछ ऐसी देवी पूजा और डूबी जा-डूबी जा की शूटिंग हुई है और भविष्य में अभी और तीव्र गति से ये शूटिंग होने वाली है। बाबा ने कहा है- “गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई (बाप के) घर का सही रास्ता बतावे तो कोई सुनने के लिए तैयार नहीं।” (अ.वा.19.10.75 पृ.201 आदि)

(17) **<u>धर्मसत्ता और राज्यसत्ता अलग-2 हाथों में</u>**:- धर्मसत्ता-राज्यसत्ता का नज़ारा सीढ़ी में नीचे दिखाया गया है। धर्मसत्ताधीश और राज्यसत्ताधीश अपनी-2 सभा-सोसाइटियाँ अलग-2 कर रहे हैं, अपनी-2 मीटिंग अलग कर रहे हैं अर्थात् धर्मसत्ता और राज्यसत्ता रावणराज्य में अलग-2 हाथों में चली जाती है। रावणराज्य की एक बहुत अच्छी निशानी दिखाई गई है कि- रामराज्य में धर्मसत्ता-राज्यसत्ता एक हाथ में होती है और रावणराज्य में धर्मसत्ता-राज्यसत्ता अनेक हाथों में चली जाती है। “धर्मसत्ता और राज्यसत्ता दो टुकड़ों में बट जाती है इसलिए द्वापर हो जाता है।(अ.वाणी 30.9.75 पृ.113 अंत) यही यज्ञ के अन्दर हुआ। मम्मा-बाबा जब तक जीवित रहे तब तक धर्मसत्ता-राज्यसत्ता एक मम्मा-बाबा के हाथ में रही। माउण्ट आबू से सारे सेवा केन्द्रों का संचालन होता था। कोई भी बच्चे को किसी भी प्रकार की तकलीफ़ होती थी तो बाबा के पास जाकर अपना संशय समाधान करते थे; लेकिन जैसे ही उन्होंने शरीर छोड़ दिया, ब्रह्माकुमार कुमारियों ने अपना-अपना रक़बा बाँट लिया और ज़ोनल इन्चार्जेस बन गए। सन् 1969/70 में ही धर्मसत्ता-राजसत्ता अलग-अलग हाथों में सौंप दी गई। देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा ये सारा कार्य सम्पन्न होता है।

धर्मसत्ताधीश जो हैं वह पुरुषवर्ग ही है। धर्मसत्ताधीश पुरुष वर्ग जो मेले, सम्मेलन, कॉन्फरेन्स और मोटी-मोटी पुस्तकें पब्लिश करने या प्रचार करने का धन्धा करते हैं और उसमें जो अड़चने आती हैं उनको सॉल्व करने के लिए, उनकी मधुबन हेड ऑफिस में मीटिंग अलग होती है। उन धर्मसत्ताधीशों की मीटिंग में जो क्लास कंट्रोल करने वाले, गद्दियों को कंट्रोल करने वाले राज्यसत्ताधीश सफेद पोशधारी दिखाए गए हैं, वे हिस्सा नहीं लेते। उन क्लास कंट्रोलर्स राज्यसत्ताधीशों की मीटिंग अलग होती है; लेकिन तभी होती है जब उनकी हिलती हुई गद्दियाँ कंट्रोल से बाहर हो जाती हैं, समस्याएँ पैदा हो जाती हैं, क्लास कंट्रोल डिस्टर्ब होता है तो ये समस्याओं का समाधान करने के लिए वो मधुबन हेड ऑफिस (विधान या लोकसभाओं) में अपनी मीटिंग करते हैं और उस मीटिंग में वो धर्मसत्ताधीश फिर कोई हिस्सा नहीं लेते। यानी धर्मसत्ता अलग हाथों में और राज्यसत्ता अलग हाथों में आ जाती है- ये रावणराज्य की मुख्य निशानी है।

बेगरी भारत

बेगरी भारत- एक तीसरा बेगरी ग्रुप और दिखाया गया है। जिसके लिए बाबा ने मुरली में कहा है-“भारत तो है मोस्ट बेगर। भारत अब

काँटों का जंगल है। काँटों की शैया पर दिखाते हैं न। भीख माँग रहे हैं। तो यह भी सबसे भीख माँगते रहते। भारत की दुर्दशा है न। भारत बिल्कुल सॉलवेंट था, अभी तो कंगाल है।"(मु.2.11.73 पृ.3 अंत) जिसके हाथ में न धर्म की सत्ता है, न राज्यसत्ता है। ये तीसरा ग्रुप जो दिखाया गया वह दोनों ही सत्ताओं से महरूम है। यानी ऐसे जो बेगरी ब्राह्मण हैं, जिनके लिए कहते हैं कि पाण्डव भी बेगर रूप में घूमते थे। जिनके हाथ में राज्य की सत्ता नहीं होती है। राज्यसत्ता का मतलब है कि उनको घण्टे-दो घण्टे तो क्या दो/पाँच मिनट भी सन्दली (गद्दी) पर बैठकर क्लास में बोलने की भी इज़ाज़त नहीं दी जाती है। धर्मसत्ता का मतलब मेले, सम्मेलनों में उनको कोई विशेष ज़िम्मेवारी का कार्य नहीं सौंपा जाएगा। यानी ब्राह्मणों की दुनियाँ के अंदर न उनका मेले, कॉन्फरेन्स या लिटरेचर छपवाने के आदि कार्य में सहयोग लिया जाता, न सूई की नोक के बराबर भी धर्मसत्ता में और राज्यसत्ता में स्थान दिया जाता है।

तीसरे ग्रुप में एक व्यक्ति को दिखाया गया है। जो काँटों की शैया पर बेगर के रूप में पड़ा हुआ है। हाथ में कटोरा लिया हुआ है और विदेशी लोग उसको भीख दे रहे हैं। ये सब किस टाइम का नज़ारा है? कलियुग के अंत का। तो 40 वर्ष का जो संगमयुग बताया सतयुग स्थापन करने के लिए, नई दुनिया स्थापन करने के लिए उसमें कलियुग का अंत भाग कौन से समय का हुआ? 76 में जाकर के ये भिखमंगा भारत बन जाता है। विदेशियों की भीख पर पलता हुआ दिखाया गया है।

दो विदेशी खड़े हुए हैं। कौन से दो विदेशी? इस्लामी और क्रिश्चियन। वो विदेशियों की भीख पर पलता हुआ दिखाया गया। भिखमंगा भारत पाण्डवों का मानिंद। पाण्डव भी क्या थे? भिखमंगे थे। उनको सुई की नोक के बराबर स्थान भी कौरवों ने देने से इन्कार कर रखा था। तो भिखमंगे हुए। तो ऐसा भिखमंगा भारत। जो भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली राम वाली आत्मा है, जो यहाँ दिखाई गई है।

उसके पास कोई प्रॉपर्टी नहीं; क्योंकि पाण्डव तो पहले ही तन, धन, धाम, सुहृद, स्वपरिवार, बीबी, बच्चे, भाई सब जुए में हार जाते हैं। कौन-सा जुआ? भगवान ने आदेश दिया है- तुम अपना तन, मन, धन, समय, संबंध, सम्पर्क सब इस ईश्वरीय यज्ञ में स्वाहा कर दो। तो भगवान के आदेश पर ये हुआ जुआ। कौरव क्या चालाकी करते हैं? अपनी लगाई हुई बाज़ी तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सब अपनी मुट्ठी में रखते हैं और पाण्डवों ने जो बाज़ी लगाई वो भी अपनी मुट्ठी में ले लेते हैं और चालाकी से (जैसे शेयर मार्केट में) गलत पासे फैंक करके उनको कह देते हैं- जाओ, तुम हार गए। तो ये धन, धाम, सुहृद, परिवार से महरूम हुआ भारत भीख पर पलता हुआ दिखाया गया है। भारत के पास दुनियाँ की कोई भी शक्ति नहीं। अगर कोई शक्ति है तो बस, एक शक्ति दिखाई हुई है कि- सिर के नीचे 'गीता' रखी हुई है। माना बुद्धि में सत्य गीता ज्ञान मुरलियों का ज्ञान भंडार भरा पड़ा है यही उसकी प्रॉपर्टी है। और उस गीता में साफ़-2 लिखा हुआ है- 5 इयर प्लैन। मुरलियों में भी बाबा ने उस 5 इयर प्लैन का ज़िक्र किया कि वो तो 5 इयर प्लैन एक के बाद एक बनाते रहते हैं, उनके प्लैन कभी सफल होने वाले हैं नहीं। लेकिन बाप जो आकर के 5 इयर प्लैन बनाते हैं- सन् 1978 से लेकर
1981/82 ये 5 वर्ष का ईश्वरीय प्लैन एक बार अगर सफल हो जाता है तो वो भिखमंगा भारत जो दूसरों के अधीन था, रोटी-कपड़े और मकान के लिए वो 5 वर्ष के बाद बेगर टू प्रिन्स बन जाता है। अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है।

उसे किसी की भीख पर पलने की दरकार नहीं रहती। ये प्लैन ईश्वरीय प्लैन था। जो अपने टाइम पर ही सफल हो जाता है। सारे कल्प के अंत तक दुबारा कोई प्लैनिंग करने की दरकार नहीं रहती। 'गुप्त भेष में सतयुग रचने आए शिव भगवान, अब तो जाग-जाग इन्सान।' किसी बड़े आदमी के रूप में आए, प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आए तो सारी दुनियाँ जान जाए। ये तो बेगर के पास पंचवर्षीय योजना का ईश्वरीय प्लैन था। वो सिर्फ एक बार की ही योजना थी भिखमंगा भारत को स्वाधीन भारत बनाने की। भिखमंगा अर्थात् दूसरों के ऊपर आधारित और स्वाधीन अर्थात् जो किसी की परवाह ना करे। अपने पैरों पर खड़ा हो जाए तो 5 इयर्स, 1982 तक का प्लैन होता है। 82 में उसका प्लैन सफल हो जाता है। इस प्रकार भिखमंगा भारत जो 76 में फुल बेगर बन गया था, वह 82 में अपने पैरों पर पूरा-2 खड़ा हो जाता है। उसको किसी का कोई भी प्रकार का आधार लेने की दरकार नहीं पड़ती। प्लैन पूरा होता है और स्थापना का फाउंडेशन लग

जाता है। ये प्लैन ईश्वरीय प्लैन अनुसार अपने टाइम के अंदर ही पूरा सफल हो जाता है। ईश्वर को दुबारा कोई प्लैनिंग करने की दरकार नहीं है।

यही बात आगे दिखायी गयी है कि जब ये कार्य होता है तो उसमें भी थोड़ा टाइम लगता है। जमदे जामदे कोई राजा नहीं बन जाता है। बाबा कहते हैं- मान लो, किसी गरीब आदमी की 10/15 करोड़ की लॉटरी निकलती है तो एकदम सारी लॉटरी उसे नहीं दी जाएगी। अगर एकदम दे दी जाए तो क्या होगा? (पागल).....। इसलिए धीरे-2 वो विश्व की बादशाही दी जाती है। बाबा तो सर्वशक्तिमान है; लेकिन मास्टर सर्वशक्तिमान का पार्ट बजाने वाली आत्मा तो कोई दूसरी है ना। वो तो धीरे-2 फुल बेगर से फुल प्रिन्स बन जाता है और वो पहले तो बेगर के रूप में काँटों की शैया पर पड़ा हुआ है। यानी ये संसार, जैसे काँटों के जंगल जैसा दु:ख देता है, ऐसे ही इस संसार में उसके लिए चारों ओर दु:ख देने वाले काँटें ही काँटें हैं। चाहे वे घर वाले, पड़ोस वाले, सम्बंधीजन या वर्षों पुराने बी.के. परिवार वाले ही क्यों न हों; लेकिन सहयोगी कोई भी नहीं रहते। ऐसे उस बेगरी भारत की दशा क्या दिखाई गई है। विदेशियों से भीख माँग रहा है। आरम्भ में अमेरिकन्स रशियंस की मानिंद दो विदेशी खड़े हुए हैं। जो कलियुग के अंत में, 40 साल का संगमयुग बताया है सतयुग स्थापन करने के लिए, नई दुनियाँ स्थापन करने के लिए, उसमें कलियुग का अंत का भाग, 76 में उसे भीख दे रहे हैं। ये वही विदेशी हैं जो उसको अन्न-धन की भीख देकर उसके किए जा रहे ईश्वरीय सेवा के कार्य में सहयोगी बन जाते हैं अर्थात् क्रिश्चियन और इस्लामी ही उधार के रूप में भीख दे रहे हैं। उस भीख पर उसका गुजारा हो रहा है। भिखारी भारत का काम क्या है? दर-दर जाकर भीख माँगता फिरे, यही है उसका धन्धा; कहने के लिए तो ये आता है कि घर बैठे भगवान मिला; लेकिन किस रूप में मिला ये किसी को पता नहीं। जिस भारत में भगवान आते हैं उस भारत की भारतेन्दु के शब्दों में 'भारत दुर्दशा' दिखाई गई है! जो भारत सतयुग आदि में प्रिन्स था, जो विश्व का फुल प्रिन्स बनता है, विश्वमहाराजन ल.ना. बनता है वही कलियुग अन्त में आकर फुल बेगर बन जाता है। जब तक फुल बेगर ना बने तब तक फुल प्रिन्स भी नहीं बन सकता। इसलिए मुरली में कहा है - "पूज्य-पुजारी, पावन-पतित भारत ही बनता है। बाकी तो हैं बीच में। ..... गाते हैं पतित-पावन, तो ज़रूर पतित हैं ना। भारत पावन था, अब पतित है।" (मु.7.9.73 पृ.3 मध्यादि)

धर्म और राज्य सत्ता दोनों से ही अलग, देश निकाला पाये हुए तथा सच्चाई-सफाई पूर्वक ईश्वरीय आदेश पर तन-मन-धन और सर्व सम्बंधों की यज्ञ में बाजी लगाने वाले पांडव बनाम राम-सम्प्रदाय के प्रतीक और प्रतिनिधि के रूप में आदि सनातनी भारत (अर्थात् राम) को काँटों की शैया रूपी जंगल में दीन-हीन दशा में (बेहद के) विदेशियों की भीख पर गुजारा करते हुये दिखाया गया है। मुरली में कहा है- "इस (कलियुगी शूटिंग के) समय वह (कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा) कहाँ होगा? ज़रूर बेगर (में प्रविष्ट) होगा।" जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है।" (मु.21.9.74 पृ.2 मध्य)

10 वर्ष की घोषणा

नीचे घोषणा लिखी है 10 वर्ष की कि 10 वर्ष में यानी कि सन् 76 में इस पुरानी कलियुगी दुनियाँ का विनाश हो जावेगा और नई सृष्टि की स्थापना हो जावेगी। वो स्थापना कोई स्थूल में होने की बात नहीं है। ये संगमयुगी कृष्ण की बात है, जो संसार सागर में पीपल के पत्ते पर गर्भकाल में पलने लग पड़ता है। बुद्धिरूपी पेट में अर्थात् बुद्धिरूपी हथेली में बहिश्त लिए हुए वह कृष्ण प्रवेश कर जाता है, जो बाद में सन् 98 को जन्माष्टमी के साथ ही 15 अगस्त के स्वतन्त्रता दिवस पर प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले करके संसार में, ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी प्रत्यक्ष हो जाता है । ये है भारत के उत्थान और पतन की 84 जन्मों की कहानी कि कैसे वो फुल प्रिन्स बनता है और कैसे फुल प्रिन्स टू फुल बेगर बनता है। 108 की माला की लिस्ट में आनेवाली सभी आत्माओं को इस फुल प्रिन्स टू फुल बेगर की प्रोसीजर से ज़रूर गुजरना पड़ेगा। वरना 108 की लिस्ट में नहीं आ सकेंगे। ईश्वरीय सेवा में तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सबकी बाजी लगानेवाले, फुल बेगर बननेवाले वो माला के दाने बनेंगे और विश्व के मालिक भी बनेंगे।

ओमशान्ति।